खादी के फूल

सन् १९४८ में

लिखित

खादी के फूल

श्री सुमित्रानंदन पंत
बच्चन

भारती भंडार, प्रयाग

प्राक्कथन

इस बार प्रयाग में बच्चन के साथ अपने दस मास के सहवास की स्मृति को स्थायित्व प्रदान करने के उद्देश्य से ही 'खादी के फूल' के नाम से, महात्मा जी को श्रद्धाजलि स्वरूप, अपनी और बच्चन की कविताओं का यह सयुक्त सग्रह प्रकाशित कराने को मैं प्रेरित हुआ हूँ।

महात्मा जी के अश्रात उद्योग से जहाँ हमें स्वाधीनता प्राप्त हुई है वहाँ उनके महान व्यक्तित्व से हमें गभीर सास्कृतिक प्रेरणा भी मिली है। महात्मा जी ने राजनीति के कर्दम में अहिंसा के वृत पर जिस सत्य को जन्म दिया है वह सस्कृति की देवी का ही आसन है। अतः बापू के उज्वल जीवन की पुण्यस्मृति से सुरभित इन खादी के फूलों को हम पाठकों को इस विनीत आशा से समर्पित कर रहे हैं कि हम खादी के स्वच्छ परिधान के भीतर गाधीवाद के सस्कृत हृदय को स्पदित कर सकेंगे।

प्रयाग
मई, १६४८

श्री सुमित्रानंदन पंत

खादी के फूल—

(श्री मुनीश वैश्य के सौजन्य से प्राप्त)

राष्ट्र-पिता

के

चरणों मे अर्पित

खादी के फूल

गीतों की प्रथम पंक्ति सूची

प्रथम पंक्ति | पृष्ठ

प्रथम पंक्ति

खादी के फूल

१

अंतर्धान हुआ फिर देव विचर धरती पर,
स्वर्ग रुधिर से मर्त्यलोक की रज को रँगकर !
टूट गया तारा, अतिम आभा का दे वर,
जीर्ण जाति मन के खँडहर का अधकार हर !

अतर्मुख हो गई चेतना दिव्य अनामय
मानस लहरो पर शतदल सी हँस ज्योतिर्मय !
मनुजो मे मिल गया आज मनुजो का मानव
चिर पुराण को बना आत्मबल से चिर अभिनव !

आओ, हम उसको श्रद्धांजलि दे देवोचित,
जीवन सुदरता का घट मृत को कर अर्पित
मंगलप्रद हो देवमृत्यु यह हृदय विदारक
नव भारत हो बापू का चिर जीवित स्मारक !

बापू की चेतना बने पिक का नव कूजन,
बापू की चेतना वसत बखेरे नूतन !

२

हाय, हिमालय ही पल मे हो गया तिरोहित
ज्योतिर्मय जल से जन धरणी को कर प्लावित !
हाँ, हिमाद्रि ही तो उठ गया धरा से निश्चित
रजत वाष्प सा अतर्नभ मे हो अतर्हित !

आत्मा का वह शिखर, चेतना मे लय क्षण मे ,
व्याप्त हो गया सूक्ष्म चाँदनी सा जन मन मे !
मानवता का मेरु, रजत किरणो से मडित ,
अभी अभी चलता था जो जग को कर विस्मित ,
लुप्त हो गया लोक चेतना के क्षत पट पर
अपनी स्वर्गिक स्मृति की शाश्वत छाप छोडकर !

आओ, उसकी अक्षय स्मृति को नीव बनाएँ ,
उसपर सस्कृति का लोकोत्तर भवन उठाएँ !
स्वर्ण शुभ्र धर सत्य कलश स्वर्गोच्च शिखर पर
विश्व प्रेम मे खोल अहिसा के गवाक्ष_वर !

३

आज प्रार्थना से करते तृण तरु भर मर्मर,
सिमटा रहा चपल कूलो को निस्तल सागर !
नम्र नीलिमा मे नीरव, नभ करता चिंतन
श्वास रोक कर ध्यान मग्न सा हुआ समीरण !

क्या क्षण भगुर तन के हो जाने से, ओझल
सूनेपन मे समा गया यह सारा भूतल ?
नाम रूप की सीमाओ से मोह मुक्त मन
या अरूप की ओर बढाता स्वप्न के चरण ?

ज्ञात नही पर द्रवीभूत हो दुख का बादल
बरस रहा अब नव्य चेतना मे हिम उज्वल,
बापू के आशीर्वाद सा ही . अतस्तल
सहसा है भर गया सौम्य आभा से शीतल !

खादी के उज्वल जीवन सौंदय पर सरल
भावी के सतरँग सपने कँप उठते झलमल !

४

हाय, आँसुओं के आँचल से ढँक नत आनन
तू विषाद की शिला बन गई आज अचेतन,
ओ गांधी की धरे, नही क्या तू अकाय-व्रण ?
कौन शस्त्र से भेद सका तेरा अछेद्य तन ?

तू अमरों की जनी, मर्त्य भू में भी आकर
रही स्वर्ग से परिणीता, तप पूत निरंतर !
मंगल कलशों से तेरे वक्षोजो में घन
लहराता नित रहा चेतना का चिर यौवन !
कीर्ति स्तंभ से उठ तेरे कर अंबर पट पर
अकित करते रहे अमिट ज्योतिर्मय अक्षर !

उठ, ओ गीता के अक्षय यौवन की प्रतिमा,
समा सकी कब धरा स्वर्ग मे तेरी महिमा !
देख, और भी उच्च हुआ अब भाल हिम शिखर
बाँध रहा तेरे अंचल से भू को सागर !

५

हिम किरीटिनी, मौन आज तुम शीश झुकाए,
सौ वसत हों कोमल अगो पर कुम्हलाए!
वह जो गौरव शृंग धरा का था स्वर्गोज्वल,
टूट गया वह ?—हुआ अमरता मे निज ओझल!
लो, जीवन सौदर्य ज्वार पर आता गाधी,
उसने फिर जन सागर मे आभा पुल बाँधी!

खोलो, मा, फिर बादल सी निज कबरी श्यामल,
जन मन के शिखरो पर चमके विद्युत के पल!
हृदय हार सुरधुनी तुम्हारी जीवन चचल,
स्वर्ण श्रोणि पर शीश धरे सोया विंध्याचल!
गज रदनो से शुभ्र तुम्हारे जघनो में घन
प्राणो का उन्मादन जीवन करता नर्तन!

तुम अनत यौवना धरा हो, स्वर्गाकाक्षित,
जन को जीवन शोभा दो · भू हो मनुजोचित!

६

देख रहे क्या देव, खड़े स्वर्गोच्च शिखर पर
लहराता नव भारत का जन जीवन सागर ?
द्रवित हो रहा जाति मनस का अधकार घन
नव मनुष्यता के प्रभात मे स्वर्णिम चेतन !

मध्ययुगो का घृणित दाय हो रहा पराजित,
जाति द्वेष, विश्वास अध, औदास्य अपरिमित !
सामाजिकता के प्रति जन हो रहे जागरित
अति वैयक्तिकता मे खोए, मुड विभाजित !

देव, तुम्हारी पुण्य स्मृति बन ज्योति जागरण
नव्य राष्ट्र का आज कर रही लौह सगठन !
नव जीवन का रुधिर हृदय मे भरता स्पदन,
नव्य चेतना के स्वप्नो से विस्मित लोचन !

भारत की नारी ऊषा सी आज अगुठित,
भारत की मानवता नव आभा से मडित !

७

देख रहा हूँ, शुभ्र चाँदनी का सा निर्झर
गाधी युग अवतरित हो रहा इस धरती पर!
विगत युगो के तोरण, गुबद, मीनारो पर
नव प्रकाश की शोभा रेखा का जादू भर!

सजीवन पा जाग उठा फिर राष्ट्र का मरण,
छायाएँ सी आज चल रही भू पर चेतन,—
जन मन मे जग, दीप शिखा के पग धर नूतन
भावी के नव स्वप्न धरा पर करते विचरण!

सत्य अहिसा बन अतर्राष्ट्रीय जागरण
मानवीय स्पर्शो से भरते है भू के व्रण!
झुका तड़ित-अणु के अश्वो को, कर आरोहण,
नव मानवता करती गाधी का जय घोषण!

मानव के अतरतम शुभ्र तुषार के शिखर
नव्य चेतना मडित, स्वर्णिम उठे है निखर!

८

देव पुत्र था निश्चय वह जन मोहन मोहन,
सत्य चरण धर जो पवित्र कर गया धरा कण !
विचरण करते थे उसके सँग विविध युग वरद
राम, कृष्ण, चैतन्य, मसीहा, बुद्ध, मुहम्मद !

उसका जीवन मुक्त रहस्य कला का प्रागण,
उसका निश्छल हास्य स्वर्ग का था वातायन !
उसके उच्चादर्शों से दीपित अब जन मन,
उसका जीवन स्वप्न राष्ट्र का बना जागरण !

विश्व सभ्यता की कृत्रिमता से हो पीड़ित
वह जीवन सारल्य कर गया जन मे जागृत !
यान्त्रिकता के विषम भार से जर्जर भू पर
मानव का सौंदर्य प्रतिष्ठित कर देवोत्तर !

आत्म दान से लोक सत्य को दे नव जीवन
नव संस्कृति की शिला रख गया भूपर चेतन !

६

दव, अवतरण करो धरा-मन में क्षण, अनुक्षण,
नव भारत के नव जीवन बन, नव मानवपन !
जाति ऐक्य के ध्रुव प्रतीक, जग वद्य महात्मन्,
हिदू मुस्लिम बढे तुम्हारे युगल चरण बन !

भावी कहती कानो मे भर गोपन मर्मर,—
हिदू मुस्लिम नही रहेगे भारत के नर !
मानव होगे वे, नव मानवता से मडित,
मध्य युगो की कारा से भू पर चल विस्तृत !

जाति द्वेष से मुक्त, मनुजता के प्रति जीवित,
विकसित होगे वे, उच्चादर्शों से प्रेरित !
भू जीवन निर्माण करेगे, शिक्षित जन मत,
वापू मे हो युक्त, युक्त हो जग से युगपत् !

नव युग के चेतना ज्वार में कर अवगाहन
नव मन, नव जीवन-सौदर्य करेगे धारण !

१०

दर्प दीप्त मनु पुत्र, देव, कहता तुमको युग मानव,
नही जानता वह, यह मानव मन का आत्म पराभव !
नही जानता, मन का युग मानव आत्मा का शैशव,
नही जानता मनु का सुत निज अतर्नभ का वैभव !

जिन स्वर्गिक शिखरों पर करते रह देव नित विचरण,
जिस शाश्वत मुख के प्रकाश से भरते रहे दिशा क्षण,
आज अपरिचित उससे जन, ओढ़े प्राणो का जीवन,
मन की लघु डगरो मे भटके, तन को किए समर्पण !

वे मिट्टी-से आज दबाए मुँह मे ममता के तृण
नही जानते वे, रज की काया पर देवो का ऋण !
ज्योति चिह्न जो छोड़ गए जन मन मे बुद्ध महात्मन्
वे मानव की भावी के उज्वल पथ दर्शक नूतन !

मनोयत्र कर रहा चेतना का नव जीवन ग्रथित,
लोकोत्तर के सँग देवोत्तर मनुज हो रहा विकसित !

११

प्रथम अहिंसक मानव बन तुम आए हिंस्र धरा पर,
मनुज बुद्धि को मनुज हृदय के स्पर्शों से सस्कृत कर!
निबल प्रेम को भाव गगन से निर्मम धरती पर धर
जन जीवन के बाहु पाश मे बाँध गए तुम दृढतर!
द्वेष घृणा के कटु प्रहार सह, करुणा दे प्रेमोत्तर
मनुज अहं के गत विधान को बदल गए, हिंसा हर!

घृणा द्वेष मानव उर के सस्कार नही है मौलिक,
वे स्थितियो की सीमाएँ है · जन होगे भौगौलिक!
आत्मा का सचरण प्रेम होगा जन मन के अभिमुख,
हृदय ज्योति से मडित होगा हिंसा स्पर्धा का मुख!

लोक अभीप्सा के प्रतीक, नव स्वर्ग मर्त्य के परिणय,
अग्रदूत बन भव्य युग पुरुष के आए तुम निश्चय!
ईश्वर को दे रहा जन्म युग मानव का सघर्षण,
मनुज प्रेम के ईश्वर, तुम यह सत्य कर गए घोषण!

१२

सूर्य किरण सतरंगों की श्री करती वर्षण
सौ रंगो का सम्मोहन कर गए तुम सृजन,—
रत्नच्छाया सा, रहस्य शोभा से गुफित,
स्वर्गोन्मुख सौंदर्य प्रेम आनंद से श्वसित!

स्वप्नों का चंद्रातप तुम बुन गए, कलाधर,
विहँस कल्पना नभ से, भाव-जलद-पर रँगकर,
रहस प्रेरणा की तारक ज्वाला से स्पंदित
विश्व चेतना सागर को कर रंग ज्वार स्मित!

प्राण शक्ति के तडित मेघ से मंद्र भर स्तनित
जन भू को कर गए अग्नि बीजो से गर्भित,
तुम अखंड रस पावस का जीवन प्लावन भर
जगती को कर अजर हृदय यौवन से उर्वर!

आज स्वप्न पथ से आते तुम मौन धर चरण,
बापू के गुरुदेव, देखने राष्ट्र जागरण!

१३

राजकीय गौरव से जाता आज तुम्हारा अस्थि फूल रथ,
श्रद्धा मौन असख्य दृगो से अतिम दर्शन करता जन पथ।
हृदय स्तब्ध रह जाता क्षण भर, सागर को पी गया ताम्र घट ?
घट घट मे तुम समा गए, कहता विवेक फिर, हटा तिमिर पट।
बाँध रही गीले आँचल मे गगा पावन फूल ससभ्रम,
भूत भूत मे मिले, प्रकृति क्रम . रहे तुम्हारे सँग न देह भ्रम।

अमर तुम्हारी आत्मा, चलती कोटि चरण धर जन मे नूतन,
कोटि नयन नवयुग तोरण बन, मन ही मन करते अभिनदन।
भूल क्षणिक भस्मात स्वप्न यह, कोटि कोटि उर करते अनुभव
बापू नित्य रहेगे जीवित भारत के जीवन मे अभिनव।

आत्मज होते महापुरुष वे अगणित तन कर लेते धारण,
मृत्यु द्वार कर पार, पुनर्जीवित हो, भू पर करते विचरण।
राजोचित सम्मान तुम्हे देता, युग सारथि, जन गन का रथ,
नव आत्मा बन उसे चलाओ, ज्योतित हो भावी जीवन पथ !

१४

लो, झरता रक्त प्रकाश आज नीले बादल के अंचल से,
रँग रँग के उडते सूक्ष्म वाष्प मानस के रश्मि ज्वलित जल से !
प्राणों के सिंधु हरित पट से लिपटी हँस सोने की ज्वाला,
स्वप्नों की सुषमा मे सहसा निखरा अवचेतन अँधियाला !

आभा रेखाओं के उठते गृह, धाम, अट्ट, नवयुग तोरण,
रुपहले परों की अप्सरियाँ करती स्मित भाव सुमन वर्षण !
दिव्यात्मा पहुँची स्वर्गलोक, कर काल अश्व पर आरोहण,
अतर्मन का चैतन्य जगत करता बापू का अभिनंदन !

नव संस्कृति की चेतना शिला का न्यास हुआ अब भू-मन में,
नव लोक सत्य का विश्व सञ्चरण हुआ प्रतिष्ठित जीवन में !
गत जाति धर्म के भेद हुए भावी मानवता मे चिर लय,
विद्वेष घृणा का सामूहिक नव हुआ अहिंसा से परिचय !

तुम धन्य युगो के हिंसक पशु को बना गए मानव विकसित,
तुम शुभ्र पुरुष बन आए, करने स्वर्ण पुरुष का पथ विस्तृत !

१५

बारबार अंतिम प्रणाम करता तुमको मन
हे भारत की आत्मा, तुम कब थे भंगुर तन?
व्याप्त हो गए जन मन में तुम आज महात्मन्
नव प्रकाश बन, आलोकित कर नव जग-जीवन!
पार कर चुके थे निश्चय तुम जन्म औ' निधन
इसीलिए बन सके आज तुम दिव्य जागरण!
श्रद्धानत अंतिम प्रणाम करता तुमको मन
हे भारत की आत्मा, नव जीवन के जीवन!

१६

हो गया क्या देश के

सबसे सुनहले दीप का

निर्वाण ।

(१)

वह जगा क्या जगमगाया देश का
तम से घिरा प्रासाद,
वह जगा क्या था जहाँ अवसाद छाया,
छा गया आह्लाद,

वह जगा क्या बिछ गई आशा किर
की चेतना सब ओर,
वह जगा क्या स्वप्न से सूने हृदय-
मन हो गए आबाद

वह जगा क्या ऊर्ध्व उन्नति-पथ हुअ
आलोक का आधार,

वह जगा क्या मानवों का स्वर्ग
उठकर किया आह्वान,

हो गया क्या देश के
सबसे सुनहले दीप का
निर्वाण !

(२)

वह जला क्या जग उठी इस जाति की
सोई हुई तकदीर,
वह जला क्या दासता की गल गई
बधन वनी जजीर,
वह जला क्या जग उठी आजाद होने
की लगन मजबूत,
वह जला क्या हो गइ बेकार कारा-
गार की प्राचीर,

वह जला क्या विश्व ने देखा हमें
आश्चर्य से दृग खोल,

वह जला क्या मर्दितो ने क्राति की
देखी ध्वजा अम्लान ,

हो गया क्या देश के
सबसे दमकते दीप का
निर्वाण !

(३)

वह हँसा तो मृत मरुस्थल में चला
मधुमास-जीवन-श्वास,
वह हसा तो कौम के रौशन भविष्यत
का हुआ विश्वास

वह हँसा तो जड उमगों ने किया
" फिर से नया शृगार,
वह हँसा तो हँस पडा इस देश का
रूठा हुआ इतिहास,

वह हँसा तो रह गया सदेह शका
को न कोई ठौर,

वह हँसा तो हिचकिचाहट-भीति-भ्रम का
हो गया अवसान,

हो गया क्या देश के
सबसे चमकते दीप का
निर्वाण !

(४)

वह उठा तो एक लौ मे बद होकर

आ गई ज्यो भोर,

वह उठा तो उठ गई सब देश भर की

आँख उसकी ओर,

वह उठा तो उठ पडी सदियाँ विगत

अँगडाइयाँ ले साथ,

वह उठा तो उठ पडे युग-युग दबे

दुखियार, दलित, कमजोर,

वह उठा तो उठ पडी उत्साह की

लहरे दृगो के बीच,

वह उठा तो झुक गए अन्याय,

अत्याचार के अभिमान,

हो गया क्या देश के

सबसे प्रभामय दीप का

निर्वाण !

(५)

वह न चाँदी का, न सोने का न कोई
धातु का अनमोल,
थी चढी उसपर न हीरे और मोती
की सजीली खोल,
मृत्तिका की एक मुट्ठी थी कि उपमा
सादगी थी आप,
किंतु उसका मान सारा स्वर्ग सकता
था कभी क्या तोल ?

ताज शाहो के अगर उसने झुकाए
तो तअज्जुब कौन,

कर सका वह निम्नतम, कुचले हुओ का
उच्चतम उत्थान,

हो गया क्या देश के
सबसे मनस्वी दीप का
निर्वाण !

(६)

वह चमकता था, मगर था कब लिए
तलवार पानीदार,
वह दमकता था मगर अज्ञात थे
उसको सदा हथियार,
एक अजलि स्नेह की भी तरलता मे
स्नेह के अनुरूप,
किंतु उसकी धार मे था डूब सकता
देश क्या, ससार,

स्नेह मे डूबे हुए ही तो हिफाजत
से पहुँचते पार,

स्नेह मे जलते हुए ही कर सके है
ज्योति-जीवनदान,

हो गया क्या देश के
सबसे तपस्वी दीप का
निर्वाण !

(७)

स्नेह मे डूबा हुआ था हाथ से
काती रुई का सूत,
थी बिखरती देश भर के घर-डगर मे
एक आभा पूत,
रोशनी सब के लिए थी, एक को भी
थी नही अगार,
फ़र्क़ अपने औ' पराए मे न समझा
शाति का यह दूत,

चॉद-सूरज से प्रकाशित एक से है
झोपड़ी-प्रासाद,

एक-सी सब को विभा देते जलाते
जो कि अपने प्राण,

हो गया क्या देश के
सबसे यशस्वी दीप का
निर्वाण !

(८)

ज्योति मे उसकी हुए हम एक यात्रा
के लिए तैयार,
की उसी के आसरे हमने तिमिर-गिरि
घाटियाँ भी पार,
हम थके माँदे कभी बैठे, कभी
पीछे चले भी लौट,
किंतु वह बढता रहा आगे सदा
साहस बना साकार,

आँधियाँ आईं, घटा छाई, गिरा
भी वज्र बारबार,

पर लगाता वह सदा था एक--
अभ्युत्थान ! अभ्युत्थान !

हो गया क्या देश के
सबसे अचचल दीप का
निर्वाण !

(९)

लक्ष्य उसका था नही कर दे महज
इस देश को आजाद,
चाहता वह था कि दुनिया आज की
नाशाद हो फिर शाद,
नाचता उसके दृगो में था नए
मानव-जगत का ख्वाब,
कर गया उसको अचानक कौन औ'
किस वास्ते बर्बाद,

बुझ गया वह दीप जिसकी थी नही
जीवन-कहानी पूर्ण,

वह अधूरी क्या रही, इसानियत का
रुक गया आख्यान।

हो गया क्या देश के
सबसे प्रगतिमय दीप का
निर्वाण !

(१०)

विष घृणा से देश का वातावरण
पहले हुआ सविकार,
खून की नदियाँ बही, फिर बस्तियाँ
जलकर गई हो क्षार,
जो दिखाता था अँधेरे में प्रलय के
प्यार की ही राह,
बच न पाया, हाय, वह भी इस घृणा का
क्रूर, निघ्न प्रहार,

सौ समस्याएँ खड़ी है, एक का भी
हल नही है पास,

क्या गया है रूठ प्यारे देश भारत-
वर्ष से भगवान।

हो गया क्या देश के
सबसे जरूरी दीप का
निर्वाण!

१७

ओ राष्ट्र महाकवि, राष्ट्रनाद, मैथिलीशरण,
हो गया राष्ट्र के पुण्य पिता का महामरण,
होकर अनाथ यह आर्त्त जाति माँगती शरण,
कुछ कहो, देवता, दैन्य - शोक - सताप - हरण।

तुम कहाँ छिपे हो युगप्रवर्त्तक सूर्यकात,
युग-पुरुष लुप्त हो गया, तिमिर छाया नितात,
सपूर्ण देश हो रहा आज दिग्भ्रात, क्लात,
बिखराओ अपने प्रखर स्वरो की शीघ्र काति!

मत रहो मौन यो, वहन महादेवी, बोलो,
कुछ तो रहस्य इस दुर्घट घटना का खोलो,
ओ नीर-भरी बदली, क्यो उमड नही आती,
क्या रक्त-सनी रह जाएगी मा की छाती?

उठ 'दिनकर', भारत का दिनकर हो गया अस्त,
शृगार देश का क्षार-धूम्र मे ग्रस्त-ध्वस्त;
वाणी के उदयाचल से ऐसी छेड तान,
तम का मसान हो नई रोशनी का निशान।

तू कहाँ आज भाई शिवमगल सिह 'सुमन',
है खडा हो गया वक्त आज बनकर दुश्मन,
वाणी मे भरकर ब्रम्हचर्य हो जा तयार,
कर चुका नही है अभी शत्रु अतिम प्रहार।

तुमसे मेरी प्रार्थना, सुमित्रानन्द(न) पत ,
सतो मे सुमधुर कवि, कवियो मे सौम्य सत
आ पडी देश पर, बधु, आपदा यह दुरत—
टूटे सत्य, शिव, सुदरता के ततु-ततु।
माने क्या है जो हुआ देश पर यह अनर्थ ,
बोलो वाणी के पुत्रो मे सबसे समर्थ ,
वदित वीणा पर गाकर अपना ज्ञान-गान
सुस्थिर कर दो भारतमाता के विकल प्राण ,
ले करामलकवत् भूत, भविष्यत, वर्त्तमान ,
ओ कविर्मनीषी, करो विश्व का समाधान।

१८

तुम पिए पडे हो कहाँ, 'शायरे इन्कलाब' ,
देखो, जो भारत के सिर के ऊपर अजाव ,
गाधी की हत्या, जोश, वात कितनी अजीव ,
अव करो होश, हिंदोस्तान के तुम नक़ीव।

तुम किस फिराक मे पड़े हुए रघुपति सहाय,
बापू के उठने से है भारत निसहाय,
शबनमिस्तान के मोती पर मत हो निसार,
हिंदोस्तान के आँसू भी करते पुकार।

हजरते 'मोहानी' भारत के सबसे महान
नेता का फिरकेबदी ने ले लिया प्राण;
तुम अब भी इसके घेरे से बाहर आओ,
अपने यौवन का क्रांतिपूर्ण स्वर दुहराओ।

ओ 'जिगर', देश का जिगर गोलियों का शिकार,
छाया है तुमपर अब भी जामों का ख़ुमार,
ख़्वाबी खुशियो में मुल्क-मुसीबत मत भूलो,
गिरती क़ौमो के शायर ही दारोमदार।

'सागर', अब सत तुम्हारा गांधी चला गया,
वह नफ़रत के कालिया नाग से छला गया
इस दो मुँह-जिह्वा के जहरीले कीरे को
कीलो कोई जादू का गाकर गीत नया।

सर्दार जाफरी, जाति आज सर्दार हीन ,
भारत माता का चेहरा मातम से मलीन ,
इसानो मे से इसानियत मिटाने को
तैयार आज हिंदू-मुस्लिम के धर्म-दीन ।
तेरी जबान मे ताकत है, दिल है दिलेर ,
है जानदार तेरी कविता का शेर-शेर ,
उठ अपना रोशन कलम उठा, मत लगा देर ,
मुल्की सियाहपन को करना है हमे जेर ।
है हमे बनाना नया एक हिंदोस्तान ,
हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई जिसमे समान ।

१६

इस शामेवतन मे इतना गहरा अधकार,
बेकार लग रहा सुब्हेवतन का इतजार,
'चकबस्त' याद आते है मुझको वारवार,
चक्कर दिमाग मे करते है उनके अगार—

"सदा यह आती है फल, फूल और पत्थर से,
ज़मी पे ताज गिरा कौमे हिंद के सर से।

तुझी को मुल्क मे रोशन दिमाग समझे थे,
तुझे गरीब के घर का चिराग समझे थे।

जो आज नख्वोनुमा का नया जमाना है·
यह इन्कलाब तेरी उम्र का फसाना है।

वतन की जान पे क्या-क्या तबाहियाँ आई,
उमँड-उमँड के जहालत की बदलियाँ आई,
चिराग अम्न बुझाने को आँधियाँ आई,
दिलो मे आग लगाने को बिजलियाँ आई।
इस इंतशार मे जिस नूर का सहारा था,
उफक पे कौम की वह एक ही सितारा था।

हदीसे-कौम बनी थी तेरी जबाँ के लिए,
जबाँ मिली थी मुहब्बत की दासताँ के लिए,
ख़ुदा ने तुझको पयम्बर किया यहाँ के लिए,
कि तेरे हाथ मे नाक़ूस था अजाँ के लिए।

.खुदा के हुक्म से जब आबो-गिल बना तेरा,
किसी शहीद की मिट्टी से दिल बना तेरा,
जनाजा हिंद का दर से तेरे निकलता है,
सुहाग .कौम का तेरी चिता मे जलता है।

अज़ल के दाम मे आना है यो तो आलम को,
मगर यह दिल नही तैयार तेरे मातम को,
पहाड़ कहते है दुनिया में ऐसे ही गम को,
मिटा के तुझको अज़ल ने मिटा दिया हमको।

तेरे अलम मे हम इस तरह जान खोते है,
कि जैसे बाप से छुटकर यतीम रोते है।

गरीब हिंद ने तनहा नही यह दाग सहा,
वतन से दूर भी तूफ़ान रंजोग़म का उठा

रहेगा रंज जमाने मे यादगार तेरा,
वह कौन दिल है कि जिसमे नही मजार तेरा,

जो कल रक़ीब था वह आज सोगवार तेरा,
.खुदा के सामने है मुल्क शर्मसार तेरा।"

गमभरी नजम यह बारबार मै पढता हूँ,
जब-जब पढता हूँ, अपने मन मे कहता हूँ—
गोखले-निधन पर लिखे गए यह बद अमर
लागू होते है बापू पर अक्षर-अक्षर

बापू ने उनको अपना गुरू बनाया था,
जो गुण-गौरव उनके जीवन मे पाया था,
बापू ने तप से उनकी सीमा चरम छुई,
जो कही गुरू पर गई शिष्य पर बैठ गई।

दृष्टा तुम थे, 'चकबस्त', नही केवल शायर,
दे गए उसे तुम तीस बरस पहले ही स्वर,
जो महा आपदा हिद देश पर आनी थी
सच कह दो, तुमको क्या यह घटना जानी थी ?

भारत-परस्त मौजूद आज यदि तुम होते,
होशोहवास ऐसे न हिंद के गुम होते,
हस्तियाँ कहाँ अब ऐसी जो सुन पाती है,
मरने पर जो आवाज़ चिता से आती है

तुम आज अगर होते—होना भी था मुमकिन,
तुम यौवन मे ही महाकाल से हुए उऋण,
यह सदमा खाया देश बडा धीरज पाता,
यह आज तुम्हारे मरने पर भी पछताता!

२०

ओ सरोजिनी वह तेरी ओजभरी वाणी ,
हिंदोस्तान की आवाज़ो की पटरानी ,
हो गया निछावर एक जमाना था जिसके
तेवर, मिठास, अदाज, साज पर लासानी ,
जिसने भारत की सोने की डचोढी पर से
आशा-उमग का नया तराना गाया था
जिसने सदियो से सोए युवक-युवतियो को
किरणो के आँगन मे हँसना सिखलाया था
जिसमे था भारत ने पिछला जौहर खोला ,
जिसमे था आनेवाला दिन-सपना बोला ,
जिसमे मदिरा का मतवालापन तो था ही ,
तूने जिसमे था दिल का अमृत भी घोला ।

ओ सरोजिनी, वह तेरी ओज भरी वाणी,
खो गई कहाँ है आज, बता तो, कल्याणी,
चल बसा अचानक तेरे गुलशन का माली,
रोता पत्ता-पत्ता, रोती डाली-डाली,
मलयानिल भी अब सायँ-सायँ-सा करता है,
जैसे इस गम मे वह भी आहे भरता है,
तू ही क्यो चुप है, बतला तो, कोकिलबयने,
माना हमने, तेरे तो टूट गए डैने,
लेकिन कवि तो दुख मे भी गाता जाता है,
क्या याद नही है शेली जो बतलाता है—
जिन गीतो मे शायर अपना ग़म रोते है,
वे उनके सबसे मीठे नग़मे होते है।

इससे बढ़कर क्या ग़म भारत पर आएगा,
तू मौन रहेगी तो फिर कौन बताएगा,
बर्दाश्त किया क्या मा भारत की छाती ने,
सिर झुका दिया कितना उसका आघाती ने,
किस पछतावे की ज्वाला उसे जलाती है,
कैसे वह अपने मन को धीर बँधाती है
ओ सरोजिनी, यदि आज नही तू गाएगी,
भारत के दिल की दिल मे ही रह जाएगी।

बुलबुले वक्त, है हमको अब भी इतज़ार,
जो हुआ देश के मधुवन पर वज्रप्रहार
उससे तेरे दिल मे जागेगी एक आग,
संसार सुनेगा पीडा का अनमोल राग,
तेरे सफ़ेद बालो पर जाती है आँखे
लेकिन ये उनसे जरा नही घबराती है,
है कहा किसी ने, जब शायर बूढा होता,
उसकी कविता तब नौजवान हो जाती है।

२१

यदि होते बीच हमारे श्री गुरुदेव आज,
देखते, हाय, जो गिरी देश पर महा गाज,
होता विदीर्ण उनका अतस्तल तो जरूर,
यह महा वेदन
किंतु प्राप्त
करता वाणी।

हो नही रहा है व्यक्त आज मन का उबाल,
शब्दो के मुख से जीभ किसी ने ली निकाल,
किस मूल केंद्र को बेधा तूने, समय क्रूर,
घावो को धोने
को अलभ्य
दृग का पानी।

होते कवींद्र इन काली घडियो के त्राता।
होते रवींद्र तो मातम का तम कट जाता,
सत्य, शिव, सुंदर फिर से थापित हो पाता,
मरहम-सा बनकर देश-काल को सहलाता,
जो कहते वे
गायक-नायक
ज्ञानी-ध्यानी।

२२

'इक़बाल' क़ब्र के अंदर सोते मौन आज,
मर्सिया क़ौम का गा सकता है कौन आज,
फ़िरक़ेबंदी के प्रोत्साहक वे थे अवश्य,
परिणाम देखकर
शायद आज
बदल जाते।

हिंदोस्तान पर उनका एक तराना था,
है देश-प्रेम क्या? हमने उससे जाना था,
बुलबुले गुलिस्ताँ मे जैसे गाती, उसको
हम गाते-गाते
हो जाते थे
मदमाते।

आवाज देश के कोने-कोने मे जाती,
प्रतिध्वनित उसे करती हर जिह्वा, हर छाती,
सदमा पहुँचे हृदयों को ढाढस बँधवाती,
वह संगदिलो को भी अदर से पिघलाती,
बापू के मरने पर जो हमें दवाए है,
उस महा व्यथा को
यदि वे वाणी
दे पाते।

२३

भारत पर आकर टूटी है क्या आधि-व्याधि,
अरविंद, आज देखो तजकर अपनी समाधि,
गाधी को हमसे छीन ले गया महा व्याध,
हम खड़े विश्व
क आगे हो
निर्धन-अनाथ।

पाया रवींद्र ने भारत का हृदयस्पंदन,
गाधी ने, उसक हाथो का कर्मठ जीवन,
तुमने, उसका विज्ञान-योग, मानस-चिंतन,
तुम तीनो को
पा किया देश ने
उच्च माथ।

गुरुदेव बहुत पहले ही थे मुँह गए मोड
बापू भी अपना नाता हमसे गए तोड़
वे, हाय, भरोसे किसके हमको गए छोड
रक्खो स्वदेश पर
स्वामिन् अपना
वरद हाथ।

२४

रघुपति, राघव, राजा राम,
पतित - पावन सीताराम!

युग के सबसे बडे पुरुष को
सबसे छोटे ने मारा,
सबसे खोटे ने मारा,
दिल्ली ही क्या, भारत ही क्या, सारी दुनिया में कुहराम!
रघुपति, राघव, राजा राम,
पतित - पावन सीताराम!

मानवता को जीवित रखना
था जिसका जीवन सारा,
दानवता के प्रतिनिधि द्वारा उसका हो ऐसा अंजाम
रघुपति, राघव, राजा राम,
पतित - पावन सीताराम!

भारत की किस्मत का टूटा
सब से तेजोज्वल तारा,
हाय-हाय, हतभागा दिन यह, हाय-हाय, हतभागी शाम।
रघुपति, राघव, राजा राम,
पतित - पावन सीताराम!

२५

हो गया गर्व भारत माता का आज चूर,

कल कटा देश, चल बसा देश का आज नूर,

नक्षत्र बुरे कुछ इस धरती के आए हैं,

अब भी इसपर

विपदा के बादल

छाए हैं।

जो मरे-कटे वे कैसे वापस आ सकते,
हल, चलो, मिला तुमको इस आफत का सस्ते,
घर-बार-द्वार से लेकिन लाखो उखड़ गए,
जो बसे हुए थे
सदियों से वे
उजड़ गए।

तलवार झूलती काश्मीर की किस्मत पर,
हैदराबाद बारूद बिछाने मे तत्पर,
नताओ मे आपस के झगडे ठने हुए,
सयोग बुरे दिन
के है सारे
बने हुए।

जो सौ रुकावटे रहते पंथ बनाता था,
घन अधकार मे भी मशाल दिखलाता था,
उसको हमने अपने हाथो बलि चढा दिया,
हमने ख़ुद अपने
मिटने का
सामान किया।

२६

इस महा विपद मे व्याकुल हो मत शीश धुनो
अरविंद संत के, धर अतर मे धीर सुनो
यह महा वचन विश्वास और आशादायी—
दृढ़ खड़े रहो
चाह जितना हो
अंधकार।

है रही दिखाती तुम्हे मार्ग जो वर्षो से
जो तुम्हे बचा लाई है सौ संघर्षों से,
वह ज्योति, भले ही नेता आज धराशायी,
है ऊर्ध्वमुखी
वह नही सकेगी
कभी हार।

मिथ्याध मोह-मत्सर को जीतेगा विवेक
यह खडित भारतवर्ष बनेगा पुन. एक,
इस महा भूमि का निश्चय है भाग्याभिषेक,
मा पुन. करेगी
सब पुत्रों का
समाहार !

२७

कल्मष-कलुष-धँसी धरती पर
एक विभा का आसन ध्वस्त,
महा निराशा अधकार मे,
हाय, हुआ सब अग-जग लय,
तमसो मा ज्योर्तिगमय!

हाड - मास - मज्जा - लोहू मे
बापू थे क्या निहित समस्त,
नही बने थे क्या वे उन
तत्त्वो से जो अव्यय-अक्षय,
असदो मा सद्गमय!

हुई चिता के अस्ताचल पर
बापू की मृत काया अस्त,
केवल उनकी छाया अस्त,
नई ज्योति से, नए क्षितिज पर
आत्मा का नक्षत्र उदय!
मृत्योर्मा अमृतगमय!

२८

भारतमाता का सबसे प्यारा बडा पूत
हो गया एक के पागलपन से पराभूत,
हो गया एक के क्रुद्ध तमंचे का शिकार,
यह तो निरभ्र
नभ-मडल से
है वज्रपात।

वह एक नही, वह सदियो का है अधकार
जिससे बापू हमको लाए मर-पच उबार,
अतिम प्रयत्न यह उसका, छाए दुर्निवार
इस तम को मरना।
था, यदि होना
था प्रभात।

वह थे भविष्य भारत के दुर्जय प्रभ प्रतीक--
यदि कवि के मन मे इस घटना का अर्थ ठीक--
कर लिया आज, उनपर कर गोली से प्रहार,
दकियानूसी
हिंदोस्तान ने
आत्मघात।

२६

जब वर्षों हमने ख़ून-पसीना एक किया,
तब भारत के जीवन मे ऐसा दिन आया,
हम आजादी के मदिर का निर्माण करें,
थापे उसमे
आजादी की
प्रतिमा सुदर

मदिर का भव्य, विशाल, मनोहारी नक्शा,
था नाच रहा सपने-सा सब की आँखा में.
साकार उसे करने को सत्य धरातल पर
संपूर्ण जाति
बस होने को ही
थी तत्पर।

लेकिन कैसे देवता हमारे रूठ गए
अब हम इन थोथे नक्शों को लेकर चाटे,
जो मूर्ति प्रतिष्ठित होने को थी मंदिर में,
वह पड़ी हुई है
लो, टुकडे-टुकड़
होकर!

३०

यह गांधी मरकर पडा नही है धरती पर,
यह उसकी काया—काया होती है नश्वर,
गाधी सज्ञा वह जो है जग मे अजर-अमर,
दी उसने केवल
जीवन क
चादर उतार।

सुर, नर, मुनि इसको अपने तन पर लेते है,
दुनिया ही ऐसी है—मैली कर देते है,
कुछ ओढ जतन से ज्यो की त्यो धर देते है,
दी उसे तपोधन
गाधी ने तप
से सँवार।

मरना जीवन की एक बडी लाचारी है,
उसके आगे खिल्कत ने मानी हारी है,
बापू का मरना जीने की तैयारी है,
बापू का मरना
सौ जीने से
जोरदार।

३१

वे तो भारतमाता की पावन वेदी पर,
कर चुके बहुत पहले थे तन-मन न्योछावर,
उनको मरने का खौफ़ नही था राई भर,
उनको ममता का
लेश नही था
जीने पर।

बामतलब था उनका हर काम ज़माने मे,
विश्वास नही वे रखते थे दिखलाने मे,
कुछ अर्थ छिपा था उनके गोली खाने मे,
क्या क्रोध करे
हम नाथूराम
कमीने पर।

नगे भारत के लिए बने नगे फकीर,
भूखे भारत के लिए सुखा डाला शरीर,
पीडित भारत की सही हृदय मे मर्म पीर,
घायल भारत के
घाव भी लिए
सीने पर।

३२

जो गोली खाकर गिरी, मरी, वह थी छाया,
है अजर-अमर उसके आदर्शों की काया,
भारत ने जिनको युग-युग तपकर उपजाया,
थे हाड़ मांस
के व्यक्ति नहीं
बाबा गांधी।

जो पकड गया है वह तो है केवल छाया,
कितने दिल मे षड्यत्री ने आश्रय पाया,
कितने कुत्सित भावो ने उसको दी काया,
वह एक नही है
इस पातक का
अपराधी।

मन के अंदर बिठलाकर नफरत के मूजी
की प्रतिमा, अपने से पूछो कितनी पूजी?
जिस भव्य भावना के प्रतीक थे बापू जी,
तुमने कितनी
वह अपने जीवन
मे साधी?

३३

जिसने युग-युग से दबे हुओ को दी आशा,
जिसने गूँगों को दी अधिकारो की भाषा,
जिसने दीनो मे छिपी दिव्यता दिखलाई,
जिसने भारत की
फूटी किस्मत
दी सँवार;

जिसने मुर्दों मे प्राणो का सचार किया,
जिसने जनता के हाथो वह हथियार दिया,
जिसके आगे साम्राज्यो ने मुँह की खाई,
जिसने सदियो की
लदी गुलामी
दी उतार;

—गोली जो हो जाए छाती के आर-पार,
—गोली जो करे प्रवाहित जीवन-रक्तधार,
—गोली जो कर दे टुकड़े-टुकड़े श्वास-तार,
एहसानमद
भारत का उसको
पुरस्कार !

३४

जिन आँखो मे करुणा का सिंधु छलकता था,
सबको अपनाने का सद्‌भाव ललकता था,
जिन आँखो मे स्वर्गों का नूर झलकता था,
वे मुँदी; नही
तारावलि नभ मे
शरमाई ?

जिस जिह्वा से ऐसा जीवन रस गरता था,
पीडा हर, युग-युग के घावो को भरता था,
जिस जिह्वा से अमृत का निर्झर झरता था,
वह रुकी, नही
पृथ्वी की छाती
थर्राई ?

शत्-शत् माताओ की वत्सलता से निर्मित,
शत्-शत् माताओ की ममता से आलोडित,
बापू की निश्छल छाती छलनी-सी छिद्रित,
क्या तुमने देखी
और न आँखे
पथराई !

३५

जिसने रिवाल्वर तेरे आगे ताना था,
बापू, बतला, तूने क्या उसको माना था,
जो तूने उसको युग कर बद्ध प्रणाम किया?
जग की, तेरी
आँखो मे कितना
अतर है!

वह दुनिया भर की नजरो मे हत्यारा था,
लेकिन नि सशय वह भी तुझको प्यारा था
उसको भी तूने अपना अतिम स्नेह दिया,
देखा, प्रभु की
छाया उसके भी
अदर है।

तू बोल अगर सकता तो निश्चय यह कहता--
साई जिसको जितने दिन रखता है, रहता,
उसने जब चाहा मुझको अपनी शरण लिया,
यह तो केवल
हरि की इच्छा
का अनुचर है।

३६

अतिम क्षण मे जो भाव हृदय मे स्थित होता,
उससे ही आत्मा का भविष्य निश्चित होता,
प्रार्थना सभा मे जाते तुमने प्राण दिए,
पाई होगी
तुमने प्रभु चरणों
की छाया।

जन्मते और मरते अति दुसह दुख होता,
तन जर्जर पल-पल क्या-क्या कष्ट नही ढोता,
तुमने क्षण मे तन-जीर्ण-वसन को दूर किया,
की मुक्ति वरण
ठुकराकर
मिट्टी की काया।

कर कोटि जतन मुनि तन-मन-प्राण खपाते है,
पर अत समय मे राम नही कह पाते है,
तुमने अतिम श्वासो से 'राम' पुकार लिया,
ऋषि-मुनि-दुर्लभ
पद आज सहज
तुमने पाया।

३७

नाथू किसको पिस्तौल मारने को लाया,
थी गलित-पलित जिसकी जन-सेवा मे काया !—
काया ही केवल वह उनकी छू सकता था,
काया का बल था बापू ने कब दिखलाया,
थी बुद्धि कहाँ
उस जड़ मिट्टी के
धोधा की।

उस ज़ेरा-बख़्तर से थे वे सज्जित-रक्षित,
जो सत्य-अहिंसा के तत्वों से था निर्मित,
ले चुकी परीक्षा थी जिसकी तप की ज्वाला,
थी एक ढाल उनकी ईश्वर निष्ठा निश्चित,
थी हिम्मत ही
हथियार हमारे
जोधा की।

था राजसूय का यज्ञ हुआ पूरा सकुशल,
गतिमान हुआ था आज़ादी का अश्व चपल,
फ़िरकेबदी ने उठ उसका पथ रोका था,
वह डटा हुआ था उससे लड़ने को अविचल,
यह कैसा मख-विध्वसी पागल प्रकट हुआ,
बलि की उसने
भारत के भाग्य-
पुरोधा की।

३८

जब से था हमने होश सँभाला उनका स्वर,
मखरित करते थे ग्राम, नगर, गिरि, वन-प्रांतर,
सूरज से थे नभमंडल में वे उदय हुए,
हम गांधी की
दुनिया में जन्मे,
बड़े हुए।

चिड़ियाँ उनके गुण की गाथाएँ गाती थी,
दिग्‌वधुएँ उनके तप की शक्ति बताती थी,
उनसे उत्साहित सहज हमारे हृदय हुए,
हम गांधी की
. दुनिया में उठकर
खड़े हुए।

व राह कठिन, पर सच्ची ही दिखलाते थे,
चलकर उसपर .खुद चलना भी सिखलाते थे,
खुद जल-जलकर पथ पर आभा बिखराते थे,
वे गांधी के
हम अधकार में
पड़े हुए।

३६

था जिसे नही परदेशी शासन का कुछ डर,
जिसने बतलाया था नाचारे ताकतवर,
ऐसे बेजोड बहादुर नेता को पाकर
हम सबने अपने
को खुशकिस्मत
समझा था।

हमने उसके तन मे भारत का तन देखा,
हमने उसके मन मे भारत का मन देखा,
उसके जीवन मे भारत का जीवन देखा,
हमने उसका व्रत
भारत का व्रत
समझा था।

उसके हँसने मे गगा-जमुना लहराई,
हाथो ने भारत की सीमाएँ सहराई,
पच्छिमी-पूरबी घाट लगे दृढ पग उसके,
सीने मे झलकी हिंद-सिधु की गहराई,
उसका मस्तक हमने
हिम पर्वत
समझा था।

वह भारत की सस्कृति-साधो से एक हुआ,
उसका पिछलगुआ हममे से प्रत्येक हुआ,
मिथ्या जो उसको था सबने मिथ्या माना,
सत जिसे कहा
उसने, सब ने सत
समझा था।

वे गाधी भारत कब अनुमाना जाता है,
बे गाधी भारत कब पहचाना जाता है,
अब अपना परिचित देश हुआ है बेगाना,
बचपन से हमने
उसको भारत
समझा था।

४०

हत्यारे गोरों की यौवन मे सही मार,

ज़ालिम पठान का भी ओड़ा दंडप्रहार,

लोहू-लुहान होने पर भी जो बचे प्राण,

कुछ काम दे गई

किस्मत भारत

माता की।

जीवन को आश्रम के तप सयम से साधा,
जेलो की दीवारो मे अपने को बाँधा,
कर लिया स्वय को देश-दीनता का प्रमाण,
क्षण भर को भी
तृण से सुख की
कब इच्छा की।

तुम मारे-मारे फिरे लिए काया जर्जर,
तुमने रक्खे कितने ही अनशन व्रत दुर्धर,
दुख-ग्लानि-वेदना रहे तुम्हारे चिर सहचर,
बस एक शहादत
मिलनी तुमको
थी बाकी।

बच गई तुम्हारी ट्रेन उलटने से तिल-तिल,
बम फटा निकट ही, सके न तुम रत्ती भर हिल,
इस इज्जत को थी खोज तुम्हारी अरसे से,
हो गई सफल
जनवरी तीस की
चालाकी।

४१

घर तुमको जनता के हित कारागार हुआ,
तप, त्याग, साधना, दम, संयम, शृंगार हुआ,
उपहास, व्यंग, आक्रोश, रोष उपहार हुआ,
तुमने मानवता के
हित क्या-क्या
सहन किया।

हर मुहिम-मोरचे पर की तुमने अगुआई,
जो बात कही वह पहले करके दिखलाई,
ससार जानता नही तुम्हारा-सा जेता,
दायित्व देश भर
का कधो पर
वहन किया।

तुम राजाओं मे राजा न्याय-परायण थे,
तुम बीच दरिद्रो के दरिद्र नारायण थे,
जन मे हरिजन, तुम नेताओ के थे नेता,
अब तुमने ताज
शहादत का भी
पहन लिया।

४२

जो महिमावानो की महानता दिखलाई,
जब मौत मिली महिमावानो की-सी पाई,
वे मृत्यु महद्, शुचि, सुदर इससे क्या पाते,
हम शोक मना
सकते अपनी
क्षति पर भारी।

उनके हाथो भारत का अभ्युत्थान हुआ
सच और अहिसा का फिर से सम्मान हुआ,
उनका जीवन शापित जग को वरदान हुआ,
कर सिद्ध गए
वे एक पुरुष थे
अवतारी।

वह मृत्यु जिसे सुकरात सुधी ने पाई थी,
वह मृत्यु जिसे ईसा ने गले लगाई थी,
वह मृत्यु जिसे पाने को देव तरस जाते,
उस अमर मरण के
सहज बने वे
अधिकारी।

४३

यह जग अपना मग भूला हुआ मुसाफिर है,
चिर चचल है, चिर विह्वल है, चिर अस्थिर है,
'पथदर्शक इसको मिलते रहते वहुतेरे,
पर परित्राण
का ही इसके
सयोग नही।

ले स्वर्ग सँदेसा तुम भी पृथ्वी पर आए,
भूले पथ तुमने एक बार फिर दिखलाए,
पिछले नबियों का भाग्य तुम्हे भी था घेरे,
तुमको भी समझे
इस दुनिया के
लोग नही।

तुम अपने तप से ऊपर उठते चले गए,
पर हम पापो से नीचे धँसते चले गए,
तुम हमे छोडकर स्वर्ग लोक को भले गए,
रह गई धरा थी
देव तुम्हारे
योग्य नही।

४४

भारत के आँगन मे जो आग सुलगती थी,

उसकी ज्वाला तुमको ही आकर लगती थी,

जो आँख तुम्हारी जल की धार बहाती थी,

उससे भारत क्या, पृथ्वी पूर्ण नहाती थी,

किस तप से तुमको

थी यह अद्भुत

शक्ति मिली ?

क्या घृणा गई फैलाई बहरा देश हुआ,
अनसुना तुम्हारा दया-प्रेम-सदेश हुआ,
परिवर्तित भारत का चिर परिचित वेश हुआ,
यह देख तुम्हे, हे बापू, कितना क्लेश हुआ,
उन आदर्शो को लोग लगे देने धोखा
जिनको उनकी
थी एक समय पर
भक्ति मिली।

तन क्षीण तुम्हारा देश-दुख से गलता था,
मन कोमल उसके पाप-ताप से जलता था,
सुन-देख अघट घटनाएँ प्राण निकलता था,
जीवन अब तुमको एक-एक क्षण खलता था,
हम झेलेंगे जो हश्र हमारा अब होगा,
तुमको तो, बापू,
मर्त्य कष्ट से
मुक्ति मिली।

४५

तुमने गुलाम हिंदोस्तान मे जन्म लिया,
अपना सारा जीवन इसमें ही बिता दिया,
मिट जाय गुलामी, और इसी तप का यह फल
तुम मरे आज
आजाद हिंद की
धरती पर।

हिंदू-मुस्लिम थे एक दूसरे के दुश्मन
तुम उनमे मेल कराने का ले बैठे प्रण,
इच्छित फलदायी सिद्ध हुआ पिछला अनशन,
अब दोनो अश्रु
बहाते है
तुमपर मिलकर।

बदी जीवन से मुक्त हुई भारत माता,
हिंदू-मुस्लिम उद्यत कहलाने को भ्राता!
तुम जभी छोडते हमको हम होते विहवल,
पर कहाँ तुम्हारे जग से जाने को आता,
इस से उत्तम,
उपयुक्त और
बेहतर अवसर।

४६

हम घृणा-क्रोध-कटुता जितनी फैलाते थे,
वे तप ज्वाला से अपनी नित्य पचाते थे,
कर गई मौत उनको हरि-चरणामृत अर्पण,
वे नित्य जहर का
प्याला चूमा
करते थे।

पद मिला उन्हे जिसके थे वे चिर अधिकारी,
हम समझे थे गलती से उनको संसारी,
कर्त्तव्य निरत भू पर उनका था छाया तन
प्रभु-गोदी मे
मन से वे झूमा
करते थे।

वे बहुत दिनो से थे मरने से निडर हुए,
वे तो मरने के पहले ही थे अमर हुए,
कातिल, तूने काटी केवल अपनी गर्दन,
वे शीश हथेली
पर ले घूमा
करते थे।

४७

लड़नेवालों मे तुम-सा कौन लड़ाका था,
हर एक देश में बँधा तुम्हारा साका था,
औ' शाति करानेवालो के तुम थे राजा,
खुलनेवाली थी
आँख जल्द ही
दुनिया की।

वह शक्ति दिखाई तुमने सिंहासन डोले,
सत्ताधारी सम्राट तुम्हारी जय बोले,
तुमने सगर्व भगी बस्ती को अपनाया,
लघुतम-महानतम
दोनो ही से
समता की।

था दोस्त दिखाई देता तुमको दुश्मन में,
तुम प्रेम-सुधा बरसाते थे समरांगण मे,
पर्वत-सी आत्मा रखते थे तृण से तन में,
थे शाहशाह छिपाए अपने मगन में,
था एक विरोधाभास तुम्हारे जीवन में,
तुमने मरकर
अपना ली राह
अमरता की।

४८

वे अग्नि पताका ले दुनिया मे आए थे,
वे स्वर्दूतों के, देवों के समझाए थे,
सौ भाँति प्रलोभन उनके पथ मे आए थे,
पर ध्यान उन्हे था
सब दिन अपने
व्रत-प्रण का।

व नही चैन से या सुख से रह सकते थे,
वे नही विलासो, वैभव मे बह सकते थे,
वे नही शिथिलता, दुर्बलता सह सकते थे,
जब तक अस्तित्व
कही पर भी था
तम घन का।

जीवन मे जलने का ही था उनका निश्चय,
वे जला किए, तम हरा किए अविरत निर्भय,
प्रज्वलित दीप बुझन के पहले हो उठता,
होकर शहीद सौ गुने हुए वे तेजोमय,
यह चरमविंदु था
समुचित उनके
जीवन का।

४९

बापू, कितने ही तेरे एक इशारे पर
फाँसीवाले तख्तो पर झूले हँस - हँसकर,
कितनो ने निर्दय गोली की बौछारो मे
निर्भय होकर
अपनी चौडी
छाती खोली।

तू खाँस-खाँसकर बिस्तर पर गर मर जाता,
[जाना सब को होता जो दुनिया मे आता।]
पहुँचाया जाता स्वर्गलोक के प्यारों मे,
लज्जित होता
देख शहीदों
की टोली।

तू आज शहीदों का राजा, ओ अभिमानी,
तू सिद्ध शहीदों का अधिकारी सेनानी,
तेरी छाती ने भी गोली खानी जानी,
तूने भी अपने
लोहू से
खेली होली।

५०

जब कानपूर के हिंदू-मुस्लिम दंगे मे
वह शिष्य तुम्हारा सत्य-अहिंसा अनुयायी
ख़ाली हाथों था घुसा भेड़ियो के दल मे
औ' क़त्ल हुआ था
उनकी ही
रक्षा करते,

त्र बापू तुमने अपने पीडित अतर से
उद्गार किए थे व्यक्त इस तरह शब्दो मे,
मुझको गणेश शकर से ईर्ष्या होती है,
भगवान काश
यह पावन मृत्यु
मुझे मिलती !'

सच्चे दिल से निकली ऐसी सच्ची वाणी
की नही उपेक्षा परमेश्वर कर सकता था,
अब तो ईर्ष्या करने का कोई ठौर नही,
जाओ गणेश
शंकर मे भुज भर
गले मिलो।

तुम अमर शहीदो के चिर पावन लोह से
धोए पथ पर, हे बापू, अपने चरण धरो,
इस वीर पथ को छूकर और प्रशस्त करो,
मानव, मानव की दुनिया है इतनी अपूर्ण
होगा बहुतो को
अभी इसी पथ
से जाना।

५१

वे तप का तेज लिए थे अपने आनन पर,
सूरज से चमके आकर जग के आँगन पर,
वे जले कि जगती मे उजियाला फैल गया,
वे जगे कि सोई
सदियो को भी
जगा गए।

तम कटा विश्व ने एक नई आभा जानी,
जिसमे निष्प्रभ हो गए युगो के अभिमानी,
भर दलित-मर्दितों के अंदर उत्साह नया,
वे उनका सारा
भ्रम, संशय, भय
भगा गए।

हो सके न विचलित अपने पथ से वे क्षण को,
अपना वे कब समझे थे अपने जीवन को,
जीना तो उनका अर्पित ही था जन-गण को,
मरने को भी
वे जन सेवा
मे लगा गए।

५२

सुकरात संत ने पिया जहर का प्याला था,
मीरा ने उसको चरणामृत कह ढाला था,
ऋषि दयानद को पडा उसीसे पाला था,
हस्तियाँ इसी
पैमाने की
विष पीती है।

हजरत ईसा को चढा दिया था सूली पर,
तन था नश्वर, लेकिन आत्मा थी अविनश्वर,
वह आज किए घर, कितनो के मन के अदर,
वह वर्तमान,
सदियो पर सदियाँ
बीती है।

हम बापू को कब तक रख सकते थे अगोर,
है जन्म-निधन जीवन डोरी के ओर-छोर,
कितना महान आदर्श हमे वे गए छोड,
कौमें ऊँचे
आदर्शो से ही
जीती है।

५३

जब देव-असुर दोनों ने मिलकर सिंधु मथा,
तब चौदह रत्नों मे अंतिम अमृत निकला,
उस मधु रस के ऊपर कितना संघर्ष हुआ,
देवो ने किस
छल-बल से उसको
छक पाया।

बापू ने एकाकी अंतर-सागर मथकर
तप से, अलभ्य मानवतामृत को प्राप्त किया,
है सत्य-अहिंसा रूप और गुण इसके ही,
जो प्राप्त किया
बापू ने सबपर
बरसाया।

अमृत रहता है ज़हर-लहर के घेरे में
बे लड़े ज़हर से उसको पाना मुश्किल है,
बापू ने जीवन-सुधा लुटाई औरो मे,
विष मे केवल
अपने प्राणों को
झुलसाया।

५४

वह सत्य अहिसा का सागर था चिर निर्मल,
था नही सतह मे, तह मे तिनके भर का बल,
उसने कब जाना था जग का छोटापन, छल,
ये डाल सके थे
उसपर छाया-
छाप नही।

हमने मिथ्या से सत्य नापना चाहा था,
हमने हिंसा से सिंधु दया का थाहा था,
खुदगर्ज़ी से फैयाज़ी को अवगाहा था,
उसकी गहराई
की हो पाई
माप नहीं।

हमने उसके आदर्शों पर बोली मारी,
हमने उसके वक्षस्थल पर गोली मारी,
अवतार क्षमा का वह जग में कहलाएगा,
आया उठकर
उसके होठों पर
शाप नहीं।

आत्मा बापू की माफ करे नरघातक को,
शामिल जिसमें सब जाति हुई उस पातक को,
इतिहास कभी यह पाप नहीं बिसराएगा,
इतिहास करेगा
क्षमा कभी
यह पाप नहीं।

५५

बापू के तन से बेजबान लोहू बहकर,
उनका शरीर ढकनेवाली चादर रँगकर,
उनके पावों के नीचे की धरती तरकर
क्या सूख गया?
क्या सूख सदा के
लिए गया?

उनके लोहू के धब्बे हैं हर दामन पर,
उनके लोहू से लाल करोड़ों के हैं कर,
भारत की चप्पा-चप्पा भूमि उसीसे तर,
कसने समझा, उस जर्जर पंजर के अदर
इतना लोहू है,
इतना ज्यादा
लोहू है !

हाथों पर, कपड़ों पर, जमीन पर मचल-मचल
वह कहता है, 'तुम हो क़ातिल, तुम हो क़ातिल !'
चुप होना उसका बरसों-सदियों तक मुश्किल,
आनेवाली अनगिनत पीढ़ियों के सिर पर
चढ़कर बापू का ख़ून पुकारेगा बेडर ! .....
तुमने उसको
ग़लती से समझा
बेज़बान ।

५६

भारत के हाथों पाप हुआ ऐसा भारी,
है लगी हुई संपूर्ण जाति को हत्यारी,
इस महा दोष का यदि करना है प्रायश्चित,
अनुताप आग में
हमें युगों तक
जलना है।

हम भटक-भटककर मरुथल में मर जाएँगे,
निर्मल स्रोतों की राह नहीं हम पाएँगे,
यदि हमें पहुँचना है मनचाही मंजिल तक
हमको उनके
बतलाए पथ पर
चलना है।

वे नहीं महज भारत के भाग्य विधाता थे,
वे सारी भावी दुनिया के भय-त्राता थे,
कर लेना है यदि उसको अपना अंत नहीं
वे साँचे थे,
जिसमें मानव को
ढलना है।

५७

हम सब अपने पापी हाथों को मलते है,
हम सब पछतावे की ज्वाला में जलते है,
लेकिन अब हम चाहे जितना रोएँ-धोएँ
वह लौट नही
सकता, जो स्वर्ग
सिधारा है।

दो बात नही करने पाए हम विदा समय,
तुम लोहू से कह गए, हमारा भरा हृदय,
हमने जीकर भारत के भाल कलक दिया
तुमने मरकर
भारत का भाग्य
सँवारा है।

बापू, तुमसे यह अतिम विनय हमारी है—
यद्यपि इसका यह देश नही अधिकारी है—
करना न इसे वचित अपने आशीषो से,
यह बुरा-भला
जैसा है, देश
तुम्हारा है।

५८

भाग्य था वे थे हमारे पथ-प्रदर्शक,
और करते ही रहे वे यत्न भरसक,
हम न मोड़े पाँव वे पहुँचे शिखर तक,
हम कदम
उनके कदम पर
धर न पाए।

हम चले वह चाल उनको लाज आई,
और हमने गलतियाँ पहचान पाई,
किंतु पश्चात्ताप के आँसू सँजोकर
शोक हम
उनके हृदय का
हर न पाए।

वे नहीं बस एक भारतवर्ष के थे,
वे विधायक विश्व के उत्कर्ष के थे,
वे हमारे पास थे जग की धरोहर,
किंतु हम
उनकी हिफाजत
कर न पाए।

५६

पृथ्वी पर जितने देश, जाति औ' महापुरुष,
सब आज प्रकट करते विषाद गाधी जी की
हत्या पर अतिशय करुण और अतिशय निर्दय
जिसने भारत-
इतिहास कलकित
बना दिया।

कोषो मे उनके थे जितने भी शब्द व्यक्त
करते सज्जनता, सहृदयता, शुचिता, मृदुता,
सबको निसार कर दिया उन्होने बापू पर,
था स्थान उन्होने
ऐसा जग मे
बना लिया।

हम हत्यारे के जाति-धर्म वालों ने क्या
समझी महानता उस महानतम सत्ता की,
जलती मशाल के नीचे रहा अँधेरा ही
बाहरवालो ने उन्हे सिद्ध साधक समझा,
घर के जोगी
का हमने क्या
सम्मान किया।

६०

बापू के अवसान पर जब मन दुखित-उदास,
धीरज देते है हमे बाबा तुलसीदास।
'सुनहु भरत भावी प्रबल, बिलखि कहेउ मुनिनाथ,
हानि, लाभु, जीवनु, मरनु जसु अपजसु विधि हाथ।

अस विचारि केहि दीजिअ दोषू,
व्यरथ काहि पर कीजिअ रोषू।'
बापू की हत्या का, भाई,
सप्रदायपन उत्तरदायी।
पर न उसे क्या दोष लगाएँ,
नाथू को निष्पाप बताएँ?

नाथू को पापी कहे अथवा हम निष्पाप,
बापू के तन-त्याग पर मन मे अति सताप।
सप्रदायपन धर्म हो या अधर्म की मूल,
बापू का हम शोक-दुख कैसे पाएँ भूल!

'तात विचार करहु मन माहीं,
सोचु जोग दसरथ नृप नाही।'
बापू ने कब निज व्रत छोड़ा,
सत्य-अहिंसा से मुँह मोड़ा ?
मानवता के रहे उपासक,
वे अपनी अंतिम साँसों तक।
'सोचनीय नहिं कोसल राऊ,
भुवन चारि दस प्रगट प्रभाऊ
भयेउ, न अहै, न अब होनिहारा
भूप भरत जस पिता तुम्हारा।'

भूप भरत को जो दिया गुरु वशिष्ठ ने ज्ञान,
भारत को करता वही अब सांत्वना प्रदान।
सोचनीय बापू नहीं, सोचनीय हम लोग,
सिद्ध न अपने को सके कर हम उनके जोग।

६१

जब तुम सजीव धरती पर चलते फिरते थे,
जब तुम अपनी निर्मल वाणी बिखराते थे,
तब तुमको हम वह इज्जत आदर दे न सके,
जिसके तुम थे
हे बापू, सच्चे
अधिकारी।

लेकिन अब जब तुम दुनिया से कर कूच गए
हमको अपनी भारी गलती महसूस हुई,
मुख नही तुम्हारा गुण वर्णन करते थकता,
आँखे श्रद्धाजलि
देते हुए
नही थकती।

क्यों न हो हमारी उन्ही कुपूतों मे गिनती
जो कष्ट पिता को जीवन मे पहुँचाते है,
लेकिन जब वह टिकठी के ऊपर चढ जाता,
तब बड़े-बडे
पिंडे उसपर
लुढकाते है।

है कमी नही दुनिया मे हँसनेवालों की,
हमने अपने कर्मो से मौका उन्हे दिया,
यह व्यग वचन मेरे सुनने मे आया है,
मौजूद पिता आँखो को नही सुहाता है,
मृत पिता आँसुओ
से नहलाया जाता है।

जग मे ऐसे भी आँसू की, उच्छ्वासो की
जो कीमत है, बापू, तुमने अवरेखी थी,
तुमने इन धुँधले-धुँधले चिन्हो मे ही तो
मानव सुधार
की आशाएँ दृढ
देखी थी।

६२

खोकर अपने हाथो से दौलत गाधी-सी,
तू आज खडी भारतमाता अपराधी-सी,
दृग द्रवित किए, सिर नमित किए, मुँह लटकाए,
छाती धक-धक,
भीगा मस्तक,
रग-रग सशक।

गाधी तेरे मुख-मडल का था उजियाला,
गोडसे लगाकर, हाय, गया खाँचा काला,
अचरज होगा यदि तृण से पर्वत छिप जाए,
आभामय है
अब भी तेरा
आनन-मयक।

यदि अवसर यह लज्जा मे शीश झुकाने का,
तो गर्वसहित ऊपर भी शीश उठाने का,
अवसाद घना उत्साह नया बनकर छाए,
बलि-गौरव में
छिप जाए हत्या
का कलक।

६३

वे आत्माजीवी थे काया से कही परे,
वे गोली खाकर और जी उठे, नही मरे,
जब से तन चढकर चिता हो गया राख-धूर,
तब से आत्मा
की और महत्ता
जता गए।

उनके जीवन मे था ऐसा जादू का रस,
कर लेते थे वे कोटि-कोटि को अपने बस,
उनका प्रभाव हो नही सकेगा कभी दूर,
जाते-जाते
बलि-रक्त-सुरा
वे छका गए।

यह झूठ, कि, माता, तेरा आज सुहाग लुटा,
यह झूठ, कि तेरे माथे का सिदूर छुटा,
अपने माणिक लोहू से तेरी मॉग पूर
वे अचल सुहागिन
तुझे, अभागिन,
बना गए।

६५

अज्ञान, अशिक्षित और अदीक्षित भारत मे
जिसमें मज़हब की अधी श्रद्धा भर बाक़ी,
आसान बडा था उसका झंडा ऊँचा कर
लोगों को भरमाना
या पागल
कर देना।

है धर्म नाम पर बेधर्मी की बात हुई,
है धर्म नाम पर बेधर्मी के काम हुए,
है धर्म नाम पर पाप कराए और किए
कितने, कितनों ने
केवल स्वार्थ
पुजाने को।

है धर्म मार्ग में आना कोई खेल नहीं
उसकी तैयारी आत्म त्याग, तप, साधन है,
उसमें विजयी होने की कीमत गर्दन है,
जो आज सुखों के साज सजाते महलों में,
जो आज बधाई लूट रहे हैं जलसों में
वे धर्म आड़ में लड़नेवाले थे योद्धा,
बस धर्म-नाम पर
लड़नेवाले
तो तुम थे।

६५

है गांधी हिंदू जनता का दुश्मन भारी,
वह करता है तुरुकों की सदा तरफदारी,
उसका प्रभाव हिंदुत्व के लिए भयकारी,
यह बात घुसी
कुछ घूमे-उलटे
माथो मे।

हिंदुत्व दिव्यतम बापू जी मे व्यक्त हुआ,
संसार उसीके कारण उनका भक्त हुआ,
हिंदू आदर्शों के ही रहकर अनुयायी
वे आज चमकते
विश्व जनो की
पाँतों मे।

जिसने मानवता के हित इतना दुख झेला,
वह कर सकता था हिंदूपन की अवहेलना,
हिंदुत्व शब्द है मानवता का पर्यायी,
हिंदुत्व सुरक्षित
था बापू के
हाथो मे।

था एक अहिंसा, दूजा सत्य किनारा,
बहती थी जिसके बीच प्रेम की धारा,
गांधी ने लाखों नारि-नरों को तारा,
बहती गंगा-सा
था वह जग-
आँगन में।

उसने तपमय कर्मों में उम्र बिताई,
मुँह मोड लिया जब फल की बेला आई,
उस वीतराग से ऋद्धि-सिद्धि शरमाई,
थी मूर्तिमान
गीता उसके
जीवन में।

गौ-गंगा औ' गीता की याद दिलाता,
वह चला गया इस दुनिया से मुसकाता,
हिंदूपन का जो शत्रु उसे बतलाता,
कुछ पाप छिपा
है उसके
हिंदूपन में।

६७

हिंदू-जनता को रहा सदा वह धर्म-प्राण,
मुस्लिम जब समझे, निकला सच्चा मुसलमान,
ईसाई को था भू-पर ईसा का प्रमाण,
पारसी, जैन, सिख, बौद्धों को था प्रिय समान,

वह संत सभी

की पूजा का

अधिकारी था।

जीवन भर रक्खी उसने अपनी आन एक—
हिंदू-मुस्लिम-ईसाई—सब मे प्राण एक,
है छिपा हुआ सब के अदर इंसान एक,
है बसा हुआ सब के भीतर भगवान एक,
वह मानवता-
मदिर का एक
पुजारी था।

थी आँख तैरती दुनिया की ऊपर-ऊपर,
वह भेद विभेदो को पैठा, पहुँचा भीतर,
उसने ऊपर उठ कहा, किया, औ' दिखलाया,
बेमानी कौमो, देशो, धर्मो के अतर,
वह सौ विरोध
के बीच
समन्वयकारी था।

६८

जब त्यागी, कर्मों से पशु को शरमाते थे,
हम एक दूसरे को दोषी ठहराते थे,
गुणविस्मृत थे, निषाद एक तो हम में था,
नाश आकर के
भाग्य हमारा
फूट गया।

इस दुनिया में हर एक वस्तु की सीमा है,
फिरकेबन्दी का जोर आजकल धीमा है,
उस नभ-ऊँची सत्ता पर हाथ उठाने में,
जैसे उसका
सारा बल-विक्रम
टूट गया।

यह सम्प्रदायपन एक बड़ा गुब्बारा था,
उसने अपने को इस गति से विस्तारा था,
उसमें ढक जानेवाला था संपूर्ण हिंद,
बापू के प्राणों
को छूकर वह
फूट गया।

६६

उसके बेटे दोनो थे हिंदू-मुसल्मान
वह बना रहा था हिंदू को तप-त्यागप्राण
मुस्लिम के पथ मे बिछा रहा था आत्मदान
गिरता न एक
इससे, दूजा
बनता महान।

उसको प्रिय थे दोनो भगवत् गीता, कुरान,
दोनो को देता था अपनी श्रद्धा समान,
पाता था दोनो मे प्रभु-वाणी का प्रमाण,
दो भिन्न सुरो
से गाता था
वह एक गान।

उस धवल कमल को तुमने समझा तक्षक था,
पालक था, जिसको तुमने समझा भक्षक था,
वह दुश्मन नबर एक तुम्हारा रक्षक था,
धीरे-धीरे
तुमको होगा
यह भासमान।

७८

ईश्वर-अल्ला एकहि नाम,
सबको सन्मति दे भगवान।

हिंदू-मुस्लिम सब परेशान,
हुए धर्म का [illegible] नाम,
बापू ने दोनो को सिखला [illegible] गान—
ईश्वर-अल्ला एकहि नाम,
सबको सन्मति दे भगवान।

ईश्वर की अल्ला की पूजा
दोनो की दोनो बेकाम,
भूल अगर हम जाए उनके [illegible] इन्सान।
ईश्वर-अल्ला एकहि नाम,
सबको सन्मति दे भगवान।

बापू तो अब अन्तर्धान,
छोड़ा है जो नाम उन्होने
उसको हम सब दे अजाम,
बापू के मुख से निकले इस महामन्त्र को करे प्रमाण।
ईश्वर-अल्ला एकहि नाम,
सबको सन्मति दे भगवान।

७१

ईश्वर-अल्ला एकहि नाम,

सबको सन्मति दे भगवान।

सरि-सगम, बन-गिरि-आश्रम से

ऋषियो ने जो कहा पुकार,

आज उसीको दुहराता है यह भगी बस्ती का सत,

... एकं सद्विप्रा बहुधा वदति!

ईश्वर-अल्ला-एकहि नाम,

सबको सन्मति दे भगवान।

आदि काल से गाय-प्रात
आर्य जाति ने हाथ पसार
जिसको माँगा, वही माँगता यह नगा साधू अवदात,
धियो योन प्रचोदयात्!
ईश्वर-अल्ला एकहि नाम,
सबको *सन्मति* दे भगवान।

वह था ऐसा हृदय उदार
भेद पराए औ' अपने का
उसे सदा था अस्वीकार,
एक मुल्क ही, एक खल्क ही समझा वह जीवन पर्यंत,
सर्वे भद्राणि पश्यनु
ईश्वर-अल्ला एकहि नाम,
सबको सन्मति दे भगवान।

७२

एक हजार बरस की जिसने
कर दी दूर गुलामी,
उस नेताओ के नेता को
एक हजार सलामी,

किया योग्य उसने अयोग्य को
यौगिक शक्ति, जगा के।

आपस में कटते-मरते थे
भूले देश भलाई,
सिखलाया उसने है हिंदू-
मुस्लिम भाई-भाई,
मंत्र मुहब्बत का दोनों के
कानों में बिठला के।

हिंदू करते थे सदियों से
जिनकी क्रूर अवज्ञा,
उन्हीं अछूतों को दी उसने
हरिजन की शुभ संज्ञा,
किए अपावन उसने पावन
दृग-जल से नहला के।

झुका धरा का सारा वैभव
उसके तप के आगे,
दान दिया जिसने अपने को
वह जग से क्या माँगे,
धन्य हुआ वह मानव के हित
तन-मन-प्राण लगा के।

उसने अपने जीवन में वह
विशद साधना साधी,
जगती के भाग्योदय का है
नाम दूसरा गाधी,
शांति विश्व पाएगा केवल
उसका पथ अपना के

भारतीय जीवन का सबसे
उज्जवल रूप दिखा के,
भारतीय संस्कृति का सबसे
व्यापक अर्थ बता के,
साथ हुआ गाधी गायत्री,
गीता, गौ, गंगा के।

७३

नरसी मेहता का गीत रेडियो गाता है,
जो वैष्णव जन के गुण लक्षण बतलाता है,
पद-पद पर चित्र तुम्हारा आगे आता है,
जैसे कवि ने
यह लिखा तुम्हे ही
रख मन मे।

तुमने ही पीर पराई अपनी-सी जानी,
पर दुख उपकारी रहकर भी निर अभिमानी,
निश्चल रक्खा तन-मन, निश्चल रक्खी वाणी,
पर श्री, पर स्त्री
पैठी न तुम्हारे
लोचन में।

निंदा न किसी की भी की, नित साधू वदे,
काटे तुमने पग-पग पर तृष्णा के फंदे,
मिथ्या से मुख, विषयो से चित न किए गंदे,
क्षण भर न रहे
तुम क्रोध-कपट के
शासन मे।

तुम राम नाम के अनुरागी निकले अनन्य,
कब तुम्हे छू सके दुर्गुण, माया, मोह-जन्य,
हो गई तुम्हारी जननी तुमसे धन्य-धन्य,
तुम मूर्त्तिमान
बन गए गान वह
जीवन मे।

७४

गांधी को हत्यारे ने हमसे छीन लिया,
भारत ही क्या, पृथ्वी भर को श्री हीन किया
भारत ही क्या पृथ्वी भर को ग़मगीन किया,
आओ, हम उनको
अब दिल में
थापित कर लें।

आचार्य नबी कितने इस दुनिया में आए,
आदर्श जगत ने कितने उनके अपनाए,
इसके पहले गांधी को भी जग बिसराए,
आओ, हम उनके
मूल तत्त्व
संचित कर ले।

रज की विनम्रता से रचकर हम उनका तन,
रखकर उसके अंदर मानवता का मृदु मन,
दे उसको सत्य-अहिंसा का श्वासस्पंदन,
आओ, हम बापू
को फिर से
जीवित कर ले।

७५

हिंसा जो उसको चाल रूचे चल सकती है,
पशु बल से अब वह मानव को छल सकती है,
उसको काबू मे रखनेवाला दूर हुआ,
उठ गई अहिंसा
आज धरा के
आँगन से।

निर्भय होकर अब चल न सकेगी अच्छाई,
सब काल रहेगी सुदरता अब शरमाई,
झूठेपन की अब मात करेगी सच्चाई,
ढक अपना मुँह
लफ़्फ़ाज़ी के
अवगुठन स।

संसार-ज़माना कितना ही पछताएगा,
लेकिन अब जल्दी शख़्स न ऐसा आएगा
जो पाजी को दे अपने दिल के साथ दुआ,
लेकिन अविरत
लड़ता जाए
पाजीपन से।

७६

अपने ईश्वर पर उसको बडा भरोसा था,
सपने मे भी उसने न किसी को कोसा था,
दुश्मनी करे कोई या उसका दोस्त बने,
दुनिया मे उसको
नही किसी से
गिला रहा।

पिछले कुछ वर्षों मे कितना कीचड उछला
हो गया कलकित कितनो का मुखडा उजला,
पर कभी न उसमें उसके निर्मल अंग सने,
वह तम-कर्दम
पर ज्वलित कमल सा
खिला रहा।

हम आजादी के पास पहुँच ज्योही पाए,
फिरकेवदी के वह भीषण झोके आए,
हम नौजवान भी उससे भागे, घबराए,
पर ज़ेर उसे सारी ताकत से करने मे
अपनी अतिम
साँसो तक बूढा
पिला रहा।

जो काम अधूरा उसने अपना छोडा था,
जिसमें हमने ही अटकाया रोडा था
(पूरे होकर ही छूटे उसके काम ठने)
हमको उसकी
सुधि बार-बार
है दिला रहा।

७७

जिस दुनिया मे भौतिकता पूजी जाती थी,
अपने बल, अपने वैभव पर इतराती थी,
उसमे तुमने केवल खाली हाथो आकर
आत्मिक गौरव-
गरिमा को फिर से
थाप दिया।

जिस दुनिया मे पशुता की मची दुहाई थी,
दानवता की ही ओर सयत्न चढाई थी,
उसको तुमने अपने चरित्र की ताक़त पर
स्वर्गिक शृंगो पर
चढने का
सकेत किया।

जो दुनिया थी शका-सदेहो से धुँधली,
उसमे तुम लाए श्रद्धा की आभा उजली,
इस नास्तिकता के, अविश्वास के युग मे भी
जो नही तुम्हारी पलको से पल मात्र टली,
इसका कि मनुज मे ही होता विकसित ईश्वर
पक्का सबूत
अपने को तुमने
बना लिया।

तुम चले गए, क्या भौतिकता फिर छाएगी ?
क्या पशुता फिर अपना साम्राज्य बढाएगी ?
मानवता फिर दानवता मे खो जाएगी ?
क्या ज्योति नही अब और जगत मे आएगी ?
इन प्रश्नो से
मथित है मेरा
आज हिया।

७८

थी राजनीति क्या, छल-बल सिद्ध अखाडा था,
गाधी जी ने उसमे घुसकर हुंकारा था—
मै सत्य-अहिंसा से मुँह कभी न मोड़ूँगा,
मै मार्ग और
मंजिल को एक
बनाऊँगा।

ऊँची से ऊँची मजिल पर आँखे दृढ कर
मै जाऊँगा उस तक चलकर ऊँचे पथ पर,
नीचे पथ से ऊँची मजिल गिर जाती है,
मै पाप न ऐसा
सिर लूँगा,
मिट जाऊँगा।

भारत-आजादी प्यारी प्राणो से बढकर,
उसपर मेरा रोयाँ-रोयाँ है न्योछावर
लेकिन तुम लाओ उसको गंदे हाथो से,
मै उसको
अपने पैरों से
ठुकराऊँगा।

७९

वे कहते थे, दुश्मन को बस वह जीत सका,
जो प्रेम-मुहब्बत से कर उसको मीत सका,
औ' प्रेम-मुहब्बत की है खास कसौटी क्या?
उसको छूकर
सब क्रोध-घृणा-
कटुता भागे।

वे कटंक पथ मे फूल बिछाते चले गए,
अपने दुश्मन की भूल बताते चले गए,
सब को अपने अनुकूल बनाते चले गए,
आदर्श अहिंसा
और सत्य के
बे-त्यागे।

मूजी को भी वे दोस्त बनाकर ही माने,
क्या हुआ किसी पागल ने मारा अनजाने,
मुस्लिम, अंग्रेज़ विरोधी थे सबसे ज़्यादा,
वे आज प्रशंसा
में उनकी
सबसे आगे।

८०

बापू के मरने पर यह शब्द जिना के थे,
गांधी निःसंशय उन महान पुरुषों में थे,
जिनको था हिंदू संप्रदाय ने जन्म दिया
औ' रहे सदा
हिंदू ही उनके
अनुयायी।

ओ जिना, सदा तुम कड़वी बात रहे कहते,
हम तो अब इनके आदी हैं सहते-सहते,
दुख और लाज से आज हमारा दबा हिया,
दुनिया परखेगी
इन जुमलों की
सच्चाई।

सब सभ्य जगत ने उनके गुण को पहचाना,
युग महापुरुष पदवी से उनको सन्माना,
भावी मानवता का उनको प्रतिनिधि जाना,
तुम लाँघ न पाए
फ़िरक़ेबंदी की
खाई।

८१

यह सच है, नाथू ने बापू जी को मारा,
क्या इतने ही से जीत गया है हत्यारा,
क्या गाधी जी थे छिति, जल, पावक, गगन, पवन ?
वे अगर यही थे
तो भी हत्यारा
हारा।

छिति मे है उनकी क्षमाशीलता, धृति बाकी,
जल है उनके मन की कोमलता का साखी,
पावक उनकी पावनता का करता वर्णन,
जिसमे तपकर
निखरा उनका
जीवन कचन।

है व्यक्त गगन मे उनके कद की ऊँचाई,
है व्यक्त गगन से उनके दिल की चौडाई,
है उनका ही मदिर-मदिर, आँगन-आँगन
सदेश प्रचारित
मुक्त समीरण
के द्वारा।

८२

उसने अपना सिद्धान्त न बदला मात्र लेश,
पलटा शासन, कट गई कौम, बट गया देश,
वह एक शिला थी निष्ठा की ऐसी अविकल,
मानो सागर
का बल जिसको
दहला न सका

छा गया क्षितिज तक आकर अखंड-अंधकार,
तूफान, बाढ़, गरज ने भी ली मान हार,
वह दीपशिखा थी एक ऊर्ध्व ऐसी अविचल,
उन्मत्त पवन
का वेग जिसे
विचला न सका!

पापों की ऐसी चली धार दुर्दम, दुर्धर,
हो गए मलिन निर्मल से निर्मल नद-निर्झर,
वह शुद्ध क्षीर का ऐसा था सुस्थिर सीकर,
जिसको काँजी
का सिंधु कभी
बिलगा न सका।

८३

तुम गए, भाग्य ही हमने समझा अस्त हुआ,
वह चिता-धूम के तिमिर तोम मे अस्त हुआ,
ऐसे ग़म मे पागल मनुष्य हो जाता है,
कुछ सच होता
है, कुछ को सच
बतलाता है।

सच तो यह है, तुम थे जमीन पर कभी नही,
तुम नभ मे थे, थी छाया से अभिपिवत मही,
छाया विलुप्त हो गई, मगर तुम कहाँ हटे,
तुम भारत के
सौभाग्य क्षितिज पर
अडिग डटे।

तुम चमक रहे हो अब भी अबर के ऊपर,
तुम ध्रुव तारा हो जिसकी आभा अविनश्वर,
तुम अभी जगत को सदियो राह दिखाओगे,
तुम भावी की
नौका को पार
लगाओगे।

८४

बापू-बापू कहना तुमको है बहुत सरल,
कह देने में लगता है जिह्वा का चंचल,
अपने को तेरा साबित करना है मुश्किल,
बैठे भी कितने
बापों को दे
दगा गए।

तुमने हमको जाना उन्मादी-उत्पाती,
फिर भी हमको दी सौंप गए अपनी थाती,
देखो हम उसको उज्ज्वल कितना रखते हैं,
आदर्श हमारे
मन में जो तुम
जगा गए।

दे गए वसीयतनामा अपना तुम हमको--
कुछ और नहीं, यह एक चुनौती है हमको—
हम नहीं बदल सकते हैं उसका अक्षर भर,
तुम इसपर अपनी
मुहर लहू की
लगा गए।

८५

बापू था ऐसा वातावरण विषाक्त बना,
जो तुम अमृतमय बातें हमें बताते थे,
वे अप्रिय थीं हो गईं हमारे कानों को,
लगता था तुम
वे ठीक राह
बतलाते हो।

तुम अपने पथ के थे इतने दृढ विश्वासी,
तुम एक तरफ ही हाथ दिखाते सदा रहे,
दुनिया की दुनिया चली दूसरी ओर मगर
तुम एक सत्य
की सतत लगाते
सदा रहे।

अब नहीं आज तुम रहे राह दिखलाने को
सब पकड़ कि जो तुमने कहते, था ठीक वही,
जिस पर तुम अपने पद-चिह्नों को छोड़ गए,
आनेवाली
दुनिया की साखी;
ठीक वही।

हमने विरोध जब किया तुम्हारा था तब भी
अन्तस में तुमको ही सच्चा माना था,
जितना हमने अपने को था जाना, समझा,
उससे ज्यादा
तुमने हमको
पहचाना था।

तुम सत्य-अहिंसा के मत से कैसे हटते,
दृढ़ बीज आदि से उनका था मन में बोया,
हम लज्जित, कृतज्ञ, तुम्हारे आगे नत इसपर—
हमसे भी जो
विश्वास न था
तुमने खोया।

८६

बापू तुमसे जो सत्य प्रवाहित होते थे,
उनके हम लोगो के अतर तक आने मे,
ऐसा लगता है, कारण प्रकट नही होता,
जैसे यह देह
तुम्हारी देनी
बाधा थी।

जिस दिन से वह जड होकर, जलकर क्षार हुई,
उन बातो की सच्चाई ही है नही खुली,
दिल की तह से आवाजे उठकर कहती है,
हमको मुद्दत से
उनपर बडा
अक़ीदा था।

मेरे मन मे उठता सवाल है रह-रहकर
पाता जवाब हूँ इसका ढूँढे कही नही,
मुझको अपने को ठीक समझने की कीमत,
क्यो तुमको देनी
पडी जिगर के
लोहू से?

८७

जब गाधी जी थे चले स्वर्ग से पृथ्वी को
मानव की पशुता से, दानवता से लडने,
तब देवो ने था उनको यह आदेश दिया,
लो देह भीम की,
बल-विक्रम
बजरगी का।

लो भुजा विष्णु की चार, एक मे गदा धरो,
करवाल एक मे और एक मे धार त्रिशूल,
औ' चक्र सुदर्शन एक हाथ की उँगली पर,
पशुता-दानवता
से लडना है
महा कठिन।

गाधी जी अपने प्रभु के आगे हो नत शिर
बोले ये मुझको दो तन दुर्बल मानव का,
लेकिन मुझमे सुर दुर्लभ आत्मा का बल दो,
आक्रमण मुझे करना है उस अतर-गढ पर,
जो मूल प्रेरणा है पशुता-दानवता की,
कह 'एवमस्तु' उनको था प्रभु ने विदा किया।

८८

भूले से भी तुमने यह दावा नही किया
लेकिन अपने कामो से सबको दिखा दिया—
उल्टा अपने को कण-तिनके सा लघु समझा—
बापू, तुम थे
सच्चे अर्थों मे
पैगबर।

था ,सत्य, अहिंसा' शब्द जगत ने जान लिया
पर उनके अर्थों का था कितना मान किया
तुमने ही की उनकी विदग्ध, व्यापक व्याख्या,
की सिद्ध सफलता
उनकी, उनपर
चल, जलकर।

हम देख नही पाते है दुनिया के आगे
हम मृग-तृष्णा की ओर चले जाते भागे
सब ऊँचे आदर्शों-उद्देश्यो को त्यागे,
तुम एक शहादत
थे बहिश्त की
धरती पर।

८९

जब कि भारत भूमि थी भीषण तिमिर से आवृता,
जब कि अपनी शक्ति का भी था नहीं हमको पता
तब कहा तुमने कि है परतंत्रता भारी व्यथा,
और मार्ग स्वतंत्रता का भी दिया सीधा बता,
देव, थे उस कोटि के तुम, थे कि जिसके कृष्ण-राम,
चल दिए संसार भर को शक्तिया अपनी जता।
अवतरित हो व्यक्त की तुमने असीम उदारता,

यदा यदाहि धर्मस्य
ग्लानिर्भवति भारत,
अभ्युत्थानमधर्मस्य
तदात्मान सृजाम्यहम।

पर गए तुम काम तो होने न पाया था खतम।
आज है तम तोम मे डूबी हुई दुनिया तमाम,

परित्राणाय साधूना
विनाशाय च दुष्कृताम्,
धर्म सस्थापनार्थाय
संभवामि युगे युगे।

याद कर यह पैज अनुपम ज्योति आशा की जगे।

९०

जब स्वर्ग लोक से पहुँचे बापू तन तजकर
भगवान बुद्ध, ईसादिक पावन पैगंबर--
सब आए उनके पास पूछने को सत्वर,
आदर्शों का जो दीप जलाया था हमने
क्या तुमने उसको
उसी तरह
जलता पाया ?

बापू बोले, आदर्शों की वह दीप-शिखा
जो आप सच्चों के तप से जागी थी भू पर,
ले चुके परीक्षा है उनकी उत्थान पतन,
वह क्षीणकाय
होकर भी है
तम के ऊपर।

लेकिन उसकी सजीवन शक्ति बढ़ाने को
मानव देता है उसको अपना स्नेह नही,
वह नही समझता स्नेह निकलता अतर से
बरसा सकते
उसको अंबर से
मेघ नही।

जीवन भर अपना हृदय गला उसमे भरता
मै रहा दीप वह अधिकाधिक जाग्रत करता,
जब लगा वहाँ से चलने अपना स्नेह-रक्त
आदर्शों के
उस दीवे मे
भरता आया।

६१

था उचित कि गाधी जी की निर्मम हत्या पर

तारे छिप जाते, काला हो जाता अबर,

केवल कलंक अवशिष्ट चद्रमा रह जाता,

कुछ और नज़ारा

था जब ऊपर

गई नज़र।

अवनि में एक प्रतीक्षा का कौतूहल था,
तारों का आनन पहले से भी उज्ज्वल था,
वे पंथ किसी का जैसे ज्योतित करते हों,
नभ जाग किसी के
स्वागत में
निश्चल था।

इस महाशोक में भी मन में अभिमान हुआ,
धरती के ऊपर कुछ ऐसा बलिदान हुआ,
प्रतिफलित हुआ धरणी के तप से कुछ ऐसा,
जिसका अमरों
के आँगन में
सम्मान हुआ।

अवनी गौरव से अंकित हो नभ के लेखे,
क्या लिए देवताओं ने ही यश के ठेके,
अवतार स्वर्ग का ही पृथ्वी ने जाना है,
पृथ्वी का अभ्युत्थान
स्वर्ग भी तो
देखे।

६२

दस लाख जनो के जिसके शव पर फूल चढ़े,
दस लाख लोग जिसकी अर्थी के साथ चले,
दस लाख मुखो से जिसकी जय-जयकार हुई।
वह मरा हुआ
भी लाखो जिंदो
का नेता।

जिसके मरने पर सारी दुनिया चीख उठी,
जिसके मरने पर सारे जग ने आह भरी,
सारे जहान की आँखो से आँसू निकले,
वह मरकर भी
अगणित हृदयो मे
अमर हुआ।

जिसके मरने पर देश-देश ने यह समझा,
जैसे उसने कोई अपना मुखिया खोया,
जिसके मरने पर कौम-कौम की झुकी ध्वजा
मातम करने को व्यक्त, समादर देने को,
उससे देवो
को ईर्ष्या क्या न
हुई होगी!

९३

ऐसा भी कोई जीवन का मैदान कहीं
जिसने पाया कुछ बापू से वरदान नहीं ?
मानव के हित जो कुछ भी करना था माने
बापू ने सबको
गिन-गिनकर
अवगाह लिया।

बापू की छाती की हर साँस तपस्या थी,
आती-जाती हल करती एक समस्या थी,
पल बिना दिए कुछ भेद कहाँ पाया जाने,
बापू ने जीवन
के क्षण-क्षण को
थाह लिया।

किसके मरने पर जग भर को पछताव हुआ ?
किसके मरने पर इतना हृदय मथाव हुआ ?
किसके मरने का इतना अधिक प्रभाव हुआ ?
बनियापन अपना सिद्ध किया सोलह आने,
जीने की कीमत कर वसूल पाई-पाई,
मरने का भी
बापू ने मूल्य
उगाह लिया।

६४

तुम उठा लुकाठी, खड़े हुए चौराहे पर,
बोले, वह साथ चले जो अपना दाहे घर,
तुमने था अपना पहले भस्मीभूत किया,
फिर ऐसा नेता
देश कभी क्या
पाएगा ?

फिर तुमने अपने हाथों से ही अपना
सर अलग देह से रक्खा उसको धरती पर,
फिर उसके ऊपर तुमने अपना पाँव दिया,
यह कठिन साधना देख कँपे धरती-अंबर,
है कोई जो
फिर ऐसी राह
बनाएगा ?

इस कठिन पंथ पर चलना था आसान नहीं,
हम चले तुम्हारे साथ, कभी अभिमान नहीं,
था, बापू, तुमने हमें गोद में उठा लिया,
यह आनेवाला
दिन सबको
बतलाएगा ।

९५

गुण तो नि.सशय देश तुम्हारे गाएगा,
तुम-सा सदियो के बाद कहीं फिर पाएगा,
पर जिन आदर्शों को लेकर तुम जिए-मरे,
कितना उनको
कल का भारत
अपनाएगा?

बाएँ था सागर औ' दाएँ था दावानल,
तुम चले बीच दोनो के, साधक, सम्हल-सम्हल,
तुम खड्गधार-सा पथ प्रेम का छोड गए,
लेकिन उसपर
पावों को कौन
बढाएगा ?

जो पहन चुनौती पशुता को दी थी तुमने,
जो पहन दनुजता से कुश्ती ली थी तुमने,
तुम मानवता का महा कवच तो छोड गए,
लेकिन उसके
बोझे को कौन
उठाएगा ?

शासन-सम्राट डरे जिसकी टंकारो से,
घबराई फ़िरकेवारी जिसके वारों से,
तुम सत्य-अहिसा का अजगव तो छोड गए,
लेकिन उसपर
प्रत्यंचा कौन
चढाएगा ?

९६

बलिदानी तो अपने प्राणों से जाता है,
फल होता क्या, वह नहीं देखने आता है,
वापू के सिर से दूर हुई ज़िम्मेदारी,
वोझा आया
अव हम सवके
सिर पर भारी।

वे जैसा कहते थे यदि हम वैसा करते
तो क्यों वे सीने पर गोली खाकर मरते,
उनके जीते तो वात न हम उनकी माने,
मरने पर ही,
आओ, हम उनको
पहचाने।

जो शांति न हम उनको जीवन में दे पाए,
आओ, हम उनकी आत्मा को ही पहुँचाएँ,
इसका कुछ उनके निकट भले ही अर्थ न हो,
लेकिन हमको कुछ ऐसा करना है जिससे,
वलिदान हमारे
वापू जी का
व्यर्थ न हो।

९७

ओ देशवासियो, बैठ न जाओ पत्थर से

ओ देशवासियो रोओ मत यों निर्झर से,

दरख़्वास्त करें, आओ, कुछ अपने ईश्वर से,

वह सुनता है

ग़मज़दों और

रंजीदों की

जब सार सरकता-सा लगता जग-जीवन से,

अभिषिक्त करें, आओ, अपने को इस प्रण से—

हम कभी न मिटने देंगे भारत के मन से

दुनिया ऊँचे

आदर्शों की,

उम्मीदों की।

साधना एक युग-युग अंतर में ठनी रहे—

यह भूमि बुद्ध-बापू-से सुत की जनी रहे

प्रार्थना एक, युग-युग पृथ्वी पर बनी रहे

यह जाति

योगियों, संतों

और शहीदों की।

९८

भारत माता की युग-युग उर्वर धरती पर
सब जग वंदित बापू की छाती का शुचितर
जो रक्त गिरा है रक्त-बीज वह बन जाए,
भारत माता
गाधी से बेटे
उपजाए !

यह सत्य, सिद्ध, गरिमा जनमाती आई है,
समयानुकूल इसने विभूति बिखराई है,
यह परपरा अपनी प्रसिद्ध क्या बदलेगी,
यह भावी के
नेताओ को भी
उगलेगी

उर्वरता, देखो, इस पृथ्वी की घटे नही,
इस परपरा का बिरवा सूख, कटे नही,
दुनिया बैठेगी एक दिवस इसके नीचे,
आओ, इसको
सब रक्त-पसीने
से सीचे

९९

उनके प्रभाव से हृदय-हृदय था अनुरंजित,
फिर भी वे थे काया-बंधन से परिसीमित,
दिल्ली मे थे तो था उनसे वर्धा वंचित,
कातिल से उनका वध न हुआ, बंधन टूटा,
अब वे विमुक्त
हो आज कहाँ
मौजूद नही।

हम खोए थे उनके वस्त्रों-व्यवहारों में,
हम खोए थे उनक मुट्ठी भर हाडों में,
उनकी तकली, उनके चर्खे के तारों में
उनके प्रति अब ऊपर का आकर्षण छूटा,
अब समझेंगी
उनके मन का
मंतव्य मही।

जिस जगह मनुज सच्चाई पर अड जाएगा,
जिस जगह मनुज आत्मा को नहीं झुकाएगा,
गिर जाएगा पर कभी न हाथ उठाएगा,
अपने हत्यारे की भी कुशल मनाएगा,
हो जाएंगे
गांधी बाबा
बस प्रकट वहीं।

१००

आधुनिक जगत की स्पर्धापूर्ण नुमाइश मे
है आज दिखावे पर मानवता की किस्मे,
है भरा हुआ आँखो मे कौतूहल-विस्मय,
देखे इनमे
कहलाया जाता
कौन मीर ?

दुनिया के नामी-नामों का सर्वोच्च शिखर,
वह फ़्रांको, तोजो, मसोलिनी पर हर हिटलर,
वह रूजवेल्ट, वह ट्रूमन, जिनकी चेष्टा पर
हीरोशीमा, नागासाकी पर टूटा कहर,
वह है चियांग, जापान गर्व को मर्दित कर
जो अर्द्ध चीन के साथ आज करता समर,
वह भीमकाय चर्चिल है जिसको लगी फ़िकर,
इँगलिस्तानी साम्राज्य रहा है बिगड़-बिखर,
वह अफ्रीका का स्मट्स गबर है जिसे नही,
क्या होता, गोरे-काले चमड़े के अदर,
वह स्टलिनग्राड
का स्टलिन लौह का
ठोस वीर।

जग के इस महाप्रदर्शन मे नम्रता सहित
संपूर्ण सभ्यता भारतीय सारी संस्कृति
के युग-युग की साधना-तपस्या की परिणति,
हम मे जो कुछ सर्वोत्तम है उसका प्रतिनिधि—
हम लाए है
अपना बूढ़ा,
नंगा फ़क़ीर।

१०१

बापू के बलिदानी शव पर
नेता, लायक,
जन के नायक,
लेखक, गायक
बहा-बहाकर अपने आँसू,
दे श्रद्धांजलि
चले गए हैं,
दुनिया में है काम और भी तो करने को

बापू के बलिदानी शव पर
एक आह पर,
एक अश्रु पर,
एक मुखर स्वर
थमी नहीं है,
सूख न पाया,
चुप न सका हो,
यह किसका स्वर, किसका आँसू, किसकी आह?
बापू के बलिदानी शव पर
सिसक-सिसककर
बिलख-बिलखकर
कौन गलाती
अपना अंतर ?
यह भारत की
आत्मा शाश्वत,
हा मर्माहत,
रघुपति, राघव, राजा राम इसे दो धीरज

१०२

हम गाधी की प्रतिभा के इतने पास खड़े
हम देख नही पाते सत्ता उनकी महान,
उनकी आभा से आँखे होती चकाचौंध,
गुण-वर्णन मे
साबित होती
गूँगी जबान।

वे भावी मानवता के है आदर्श एक,
असमर्थ समझने में है उनको वर्तमान,
वर्ना सच्चाई और अहिंसा की प्रतिमा,
यह जाती दुनिया
से होकर
लोहू लुहान!

जो सत्य, शिव, सत सुन्दर, गुणि-गण होता है
दुनिया रहती है उसके प्रति सदा अजान,
तब उसे देखती उसके प्रति नतशिर होती
जब कोई कवि
करता उसको
आँखें प्रदान

जिन आँखों से तुलसी ने राघव को देखा
जिन आँखों से सूरदास ने कान्हा को,
कोई भारत का कवि गांधी को भी देखेगा,
दर्शाएगा भी
उनकी सत्ता
दुनिया को।

भारत का गांधी न्यारा नहीं तब तक होगा
भारती नहीं जब तक देगी गांधी अपना,
जब वाणी का मेधावी कोई उतरेगा,
तब उतरेगा
पृथ्वी पर गांधी
का सपना।

जायसी, कबीरा, सूरदास, मीरा, तुलसी,

मैथिली, निराला, पंत, प्रसाद, महादेवी,

ग़ालिबे-मीर, दर्दोनज़ीर, हाली, अकबर,

इक़बाल, जोश, चकबस्त, फ़िराक़, जिगर, सागर

की भाषा निश्चय वरद पुत्र उपजाएगी

जिसके तप तेजस्वी-ओजस्वी वचनों में

मेरी भविष्य

वाणी सच्ची

हो जाएगी।

१०३

बापू की पावन छाती से जो खून बहा,
यह गलत, उसे कपडे-मिट्टी ने सोख लिया,
जड मिट्टी-कपड़े मे है इतनी शक्ति कहाँ,
बापू का तेजस-
पुज रक्त
बर्दाश्त करे !

वह बापू के सीने से बाहर आते ही
अति प्रबल, क्षिप्र विद्युत्-धारा मे परिवर्तित
हो, पैठ गया हर भारतवासी के तन मे,
कोई जिसकी
रग मे उनका
रक्त नही !

मै सोच रहा था अब तक बात मनुष्यो की,
मेरी काली सतरो मे लाली-सी झलकी,
क्या आज लेखनी को भी मेरी कलुष-मुखी
बापू के कण भर
लोहू का
वरदान मिला !

१०४

उस परम हंस के घायल होकर गिरते ही
शत-शत कलमों-कंठों से बरबस निकल-निकल
शत-शत प्रबंध, कविताओं ने नभ गूँज दिया,
जैसे सहसा
चीत्कार कर उठी
सरस्वती।

१५३

मैं एक-एक लेखक के प्रति आभारी हूँ,
मैं एक-एक कवि के प्रति हूँ साभार झुका,
जिसकी रोई लेखनी निधन पर बापू के,
जिसका क्रंदन
स्वर-शब्दों में
साकार हुआ।

अपने कवित्व या जोड़-जोड़ अक्षर धरने
की क्षमता का भी आज ऋणी हूँ मैं भारी,
मेरे दुख-सुख में काम सदा वह आई है,
पर कभी नहीं
इतनी जितनी
इस अवसर पर।

यदि वाणी का आधार न मुझको मिल पाता,
तब महाशोक, वेदना, व्यथा के सागर से,
तब महापाप, अनुताप, शाप की भँवरों से,
जिसमें इस घटना ने था मुझे ढकेल दिया,
मैं समझ नहीं
पाता कैसे
ऊपर आता।

१०५

तुम महा साधना, जग कुवासना मे विलीन,
तुम महा तपस्या, जग छल-छिद्रो से मलीन,
तुम महा मुक्त, जग सौ-सौ बधन के अधीन,
यह रहा तुम्हारी
सत्ता से सब दिन
अजान।

तुम महा व्रती, कब सके कर्म का पिड छोड़,
तुम महा यती, कब सके फलो से चित्त जोड,
था महा कृती जब मिली तुम्हारी कृपा कोर,
अब जगा पाप,
कर गए विश्व से तुम
प्रयाण।

तुम महाप्राण, मै लघु-लघु साँसो मे सीमित,
तुम महामनुज, मै कुटुँब-कबीले तक परिमित,
तुम महाकाव्य के महोदात्त नायक निश्चित,
मै करूँ गीत से
कैसे श्रद्धाजलि
प्रदान।

१०६

यह समय नही है गाने, गान सुनाने का,
यह शोक-शर्म से अपना शीश झुकाने का,
पर, हाय कलेजा फटता है चुप रहने से,
इस विषम घडी
में जी कैसे
धीरज पाए।

कितने ही उनकी सुना रहे है गुण-गाथा,
कुछ कहे बिना मुझसे भी नही रहा जाता,
उनमे मेरे भी टूटे-फूटे छद मिले,
बापू के प्रति
जो गीत जा रहे
है गाए।

श्रद्धाजलि उनके चरणो में मै क्या दूँगा,
इसको ही अपनी चरम सफलता समझूँगा,
यदि मेरे अस्फुट शब्द, विचारो, भावो मे
कुछ ठेस-क्लेश
भारत का, वाणी
पा जाए।

१०७

वन गमन समय मुनियों का वेश बनाए,

जब सीतापति गंगा तट पर थे आए,

केवट ने उनको थे यह वचन सुनाए—

'है एक तरह के हम दोनो व्यवसायी,

तुम भवसागर,

मैं सरि से

पार लगाता।'

थे कहाँ राम-भगवान, कहाँ था केवट,
था भक्ति-भावना से ऊभा-चूभा घट,
निकले थे बैना प्रेम-लपेटे अटपट,
(शब्दों ने नापी कब दिल की गहराई ?)
मैं उसी मनस्थिति
मैं अपने को
पाता।

बापू तुमने बीनी भारत की किस्मत,
भारती-तार-ताने-भरनी में मैं रत,
तुम देश-पिता, मैं देश-पुत्र—सच्चा ही,
व्यापार साम्य से यह कहने की हिम्मत—
तुममें-मुझमें
कुछ और निकट का
नाता !

१०८

कुछ नही हमारे शब्द, छंद में, रागों मे,
हे बापू, जो हो योग्य तुम्हारे चरणो के,
पर कठो कों कैसे हम रूँधे रक्खे जब
करते अतर
उद्वेलित आहों
के झोंके।

जिस क्षण से तुम मानवता पर बलिदान हुए,
भावो का और विचारों का बाना-ताना
फैलने लगा दिन-रात हमारे मानस पर,
तैयार हुआ
जिससे यह वाणी
का बाना।

यह वाणी की खादी ही कट-छँटकर आई
इन पद्यो के निर्गंध प्रसूनों, कलियो में,
बापू, जो अर्पित होती तुमको दिशि-दिशि से
लो मिला इन्हें
भी उन शत
श्रद्धांजलियो में।